प्राक्कथन

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव श्रृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज ने वेदों के विषय में इतना उच्चारण किया है कि जिस सहस्त्रों पृष्ठों में लिपिबद्ध करना भी कठिन है। पूज्यपाद गुरुदेव वेद पाठ करते समय संस्कृत व देवनागरी भाषा में प्रवचन करते समय शब्दों को इतनी उत्तमता से उच्चारण करते हैं कि जिसको शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। उनकी उच्चारण ध्वनि व उस ध्वनि के वाक्य अन्तराल, शब्द अन्तराल, को आप प्रत्येक वाक्य, शब्द, शब्द के अन्तर्गत प्रत्येक अक्षर को जैसे स्वर, स्वर सहित व्यञ्जन, स्वर रहित व्यञ्जन, अनुस्वार व वैदिक ध्वनि उच्चारण चिह्न को पृथक-पृथक अनुभव कर सकते हैं।

वेदमन्त्र अकारादि क्रम से देवता विवरण के अनुसार लिए गए हैं। देवता के अन्तर्गत आने वाले वेदमन्त्र को भी अकारादि क्रम के अनुसार ही लिया गया है। देवता के साथ जो संख्या लिखी हुई है वह वेदमन्त्र की गणना दर्शाता है। कुल देवताओं की संख्या १०८ है। व वेदमन्त्रों की संख्या २४०६ है।

मैंने कई काल में कहा है पुत्र! संसार में जितने भी वेदमन्त्र हैं, प्रत्येक वेदमन्त्र उस महान प्रभु की आभा है और उसी का गान गाता रहता है। परन्तु ऋषि मुनियों ने वेदों में से उस वस्तु को व्यवहार में साकार रूप दिया जिसका जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है। जैसे गायत्री २४ अक्षरों वाली गायत्री कहलाती है। तीन उस में व्याहृतियां मानी जाती हैं। हमारा यह जो स्थूल मानव शरीर है यह २४ तत्त्वों से बना हुआ है। उन २४ तत्त्वों से जो बना हुआ शरीर है प्रत्येक अक्षर का सम्बन्ध प्रत्येक तत्त्व से माना जाता है इस मानवीय तथ्य को जानना है। उस महान प्रभु की प्रतिभा के विभाग किए जाते हैं। कुछ शब्द इस प्रकार के हैं जिनका सम्बन्ध मानो प्राणों से है, कुछ का सम्बन्ध मन से है। कुछ का मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से कुछ का इन्द्रियों से है। परन्तु प्रत्येक अक्षर का जो बोधक है यह हमारा शरीर ही है। तो ऋषि मुनियों ने इन वाक्यों को साकार रूप दिया और साकार रूप देने का एक ही अभिप्राय था कि जिसके ऊपर हम अनुसन्धान कर सकें और अपने जीवन की आभा से उसका हम सम्बन्ध अथवा उसका मिलान कर सकें। रहा यह कि मैं गायत्री के गूढ़तम रहस्य को तो कोई विशेष प्रतिभा में ले जाना नहीं चाहता हूँ। गायत्री कहते हैं वेद मन्त्रों के गान गाने को। श्रृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज

पण्डित युधिष्ठर मीमांसक की पुस्तक वैदिक छन्दो मीमांसा पृष्ठ १३६ के अनुसार गायत्री छन्द के २५ भेदन् पाये जाते हैं। जिस वेदमन्त्र का विद्वानों ने गायत्री छन्दः (८+८+८=२४ अक्षरों) है। यहां पर गायत्री छन्दः (८+८+८) वाले ही वेदमन्त्र लिए गए हैं इन सभी वेदमन्त्रों का स्वर षड्ज है।

वेदमन्त्रों का भाष्य ऋग्वेद ०१.०१.०१ से ०७.६२.०१ तक महर्षि दयानन्द, ७.६२.२ से १०.१९१.०४ तक आर्य मुनि, पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु व पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार का लिया गया है। यजुर्वेद भाष्य महर्षि दयानन्द, सामवेद भाष्य रामनाथ वेदालंकर व अथर्ववेद भाष्य क्षेमकरण त्रिवेदिना लिया गया है। वेदमन्त्र का भाष्य तो मात्र एक वेदमन्त्र का संक्षिप्त परिचय मात्र होता है।

वेदमन्त्रों का चहुमुखी भाष्य तो योगी ही कर सकता है। श्रृङ्गी मुनि कृष्ण दत्त जी महाराज

जिस जिस मन्त्र का जो जो अर्थ होता है वही उसका देवता कहलाता है। महर्षि दयानन्द

मन्त्रों पर जो (◌॑ ◌॒ ◌॓) आदि संख्या डली हुई है, ये अंङ्क क्रमशः संख्याएँ उदात्त, स्वरित और अनुदात्त के चिह्न हैं।

ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में अनुदात्त का चिह्न नीचे (-) रेखा से उसके लिए सामवेद में अंक (◌३), ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में स्वरित का चिह्न (।) रेखा से सामवेद में अंक (◌२) ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में उदात्त पर कोई चिह्न नही होता वह सामवेद में (◌१) दिखाया जाता है।

अथर्ववेद के मन्त्रों में एक वैदिक चिह्न ◌ꣳ यह भी प्राप्त होगा जिसे स्वतन्त्र स्वरिता व स्वरिता द्वि कहा जाता है।

ओ३म् भूर्भुवः॒ स्वः॒। तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनी वाजनेयी संहिता ३६.३

ओ३म् तत् स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ शुक्ल यजुर्वेद काण्व संहिता ३.४३

ओ३म् तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो॒ नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ऋग्वेद शाकल ३.६२.१०

ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥सामवेद १४६२

उदात्तः उच्चै, अनुदात्तः नीचै , स्वरित: समाहारः (महर्षि पाणिनी अष्टाध्यायी, १.२.२९, १.२.३०, १.२.३१) **की प्रथम परिभाषा।**

उदात्त की परिभाषा जहाँ उपयुक्त हो वहाँ गति तथा ऐसी शक्ति एवं वेग जिसकी समता संभव न हो । उदात्त की अनुभूति के अंतस्तत्व मन की ऊर्जा, उल्लास, संपूर्ण चेतना के अभिभूत हो जाने की अनुभूति, आदर तथा विस्मयमिश्रित संभ्रम बताए गए हैं । **अनुदात्त** की परिभाषा तटस्थ सामान्य न तो उच्च और न ही कम स्वर । **स्वरित** की परिभाषा तटस्थ सामान्य न तो उच्च और न ही कम स्वर । **प्रचय और निघात पांच अक्षर होते हैं॥**

द्वितीय परिभाषा

उच्चैरुदात्तः ॥ १.२.२९

ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽजुदात्तसंज्ञः स्यात्। तालु कण्ठ आदि सखण्ड स्थानों के ऊपर के भाग से उच्चरित अच् उदात्त संज्ञक होता है।

नीचैरनुदात्तः ॥ १.२.३०

ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेष्वधोभागे निष्पन्नोऽच् अनुदात्तसंज्ञः स्यात्। तालु कण्ठ आदि सखण्ड स्थानों के अधोभाग से उच्चरित अच् अनुदात्तसंज्ञक होता है ।

समाहारः स्वरितः ॥ १.२.३१

उदात्तानुदात्तत्वे वर्णधर्मौ समाहियेते यत्र सोऽच् स्वरितसंज्ञः स्यात्। तालु कण्ठ आदि सखण्ड स्थानों के मध्यभाग से उच्चरित अच् स्वरितसंज्ञक होता है । अथवा उदात्त तथा अनुदात्त स्थानों के मध्यभाग से बोला जाने वाला स्वर स्वरित होता है।

इस ई पुस्तिका में सभी वेदमन्त्रों को वैदिक चिह्न उदात्त, अनुदात्त, व स्वरित सहित संयोजन किया गया है।

लेकिन वेदमन्त्रों का पाठ महर्षि पाणिनी व्याकरण, विभाषा छन्दासि ॥ १.२.३६। छन्दसि विभाषा एकश्रुतिः स्यात्। सिद्धान्त कौमुदी ३६६५। के अनुसार वेदमन्त्रों का गायन एक श्रुति भी किया जा सकता है।

पुनरुक्ति तो बेटा! रहस्य होता है। हे गायत्री माता! तू हृदय को पवित्र बना। तुझे वेदों ने गायत्री दुर्गा कहा है क्योंकि तू मानव के दुर्गुणों को शान्त करने वाली है, हम तेरी गोद में आए हैं। हमारे हृदय को पवित्र बना। हमारी जितनी भी कामनाएं है वह सब पवित्रत्व हों। हे मेरे भोले! जब मानव इस आकृति में गायत्री छन्दों में रमण करता है कि जहां आते हैं वहीं माता विराजमान है। यह जो ब्रह्माण्ड है, यह जो ब्रह्मचक्र है यह चौबीस खम्बों वाला है। मानव का शरीर भी चौबीस खम्बों वाला है। गायत्री छन्द में भी चौबीस ही अक्षर कहलाते हैं। मानो ब्रह्माण्ड की भी चौबीस ही धारा कहलाती हैं। श्रृङ्गी मुनि कृष्णदत्त जी महाराज

1. अग्नि...3
2. अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः..............................15
3. अपांनपात् सोम आपश्च देवताः 15
4. अम्बा देवता..15
5. अश्विनौ...15
6. असमाती राजा...17
7. आत्मस्तुतिः...17
8. आत्मा सूर्यो वा 18
9. आदित्यः...18
10. आपः..19
11. आप्रियः 19
12. इडादयो लिङ्गोक्ता देवताः.................................. 20
13. इध्मः समिद्धौ वाग्निः 20
14. इन्द्र.. 20
15. इन्द्रउषाश्च 46
16. इन्द्रवायू 46
17. इन्द्राग्नी 46
18. इन्द्रापूषणौ... 48
19. इन्द्राबृहस्पती 48
20. इन्द्रावरुणौ... 48
21. इन्द्राश्वौ.. 48
22. इन्द्रोमरुत्वान्.. 48
23. इळः... 48
24. ईज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च 48
25. उलूखलः 49
26. उषाः 49
27. ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिः 49
28. ऋभवः 49
29. ओषधयः 49
30. कुष्ठस्तक्मनाशनः.. 49
31. कृषीवलाः कवयो वा देवताः................................ 49
32. क्षत्रपतिर्देवता.. 49
33. गौः... 49
34. गौः, सूर्यः 50
35. ग्रावाणः 50
36. तनूनपातः 50
37. तरन्तो वैददश्विः... 50
38. त्वष्टा.. 50
39. दम्पती.. 50
40. दम्पत्योराशिषः... 50
41. देवा 50
42. देवीर्द्वारः.. 50
43. देव्यः 50
44. द्यावापृथिवी 51
45. द्यावापृथिव्यौ 51
46. द्यावापृथिव्यौ हविर्धाने वा 51
47. द्रविणोदाः...51
48. नराशंसः...51
49. परमेश्वरो देवता 51
50. पर्जन्यः 51
51. पवमानः...51
52. पवमानः सोमः 51
53. पूजा देवता 73
54. पूषा 73
55. पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः 74
56. प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः..................................... 74
57. फालमणिः, वनस्पतिः 74
58. बर्हिः.. 75
59. बृबुस्तक्षा 75
60. बृहस्पतिर्देवता 75
61. ब्रह्मगवी 75
62. ब्रह्मणस्पतिः 75
63. मन्त्रोक्ताः 75
64. मरुतः... 75
65. मरूतः 76
66. मरुद्गणः.. 77
67. मरूत इन्द्रश्च 78
68. मित्रः 78
69. मित्रावरुणौ 78
70. रथवीतिर्दाल्भ्यः 79
71. रात्रिस्तवः...80
72. रुद्रः..80
73. रुद्रः, व्याघ्रः 80
74. वरुणः 80
75. वरुणमित्रार्यमणः..80
76. वायुः 81
77. विद्वांसो...81
78. विद्वान्..81
79. विश्वेदेवा ऋत्विजो वा...81
80. विश्वेदेवाः...81
81. विष्णुः 82
82. वैश्वानरः 83
83. शशीयशी... 83
84. संस्फानम्... 83
85. सदसस्पतिः.. 83
86. सदसस्पतिर्नराशंसो वा 84
87. सरस्वती 84
88. सरस्वान् 84
89. सविता.. 84
90. सविता भगो वा.. 85
91. सार्पराज्ञी सूर्यो वा... 85
92. सावर्णेर्दानस्तुतिः.. 85
93. सूर्यः... 85
94. सोमः.. 86

1. अग्नि

1. **ओ३म्** अग्न॒ आ या॑हि वी॒तये॑ गृणा॒नो ह॒व्यदा॑तये । नि होता॑ सत्सि ब॒र्हिषि॑ ॥
2. **ओ३म्** अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥
3. **ओ३म्** अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥
4. **ओ३म्** अग्न॒ आयूं॑षि पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः । आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुना॑म् ॥
5. **ओ३म्** अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥
6. **ओ३म्** अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥
7. **ओ३म्** अग्न आयूꣳषि पवस आ सुवोर्ज इषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥
8. **ओ३म्** अग्न॒ऽआयूꣳषि पवस॒ऽ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः ।आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुना॑म् ॥१६॥
9. **ओ३म्** अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ ब्रुवे । दे॒वाँ आ सा॑दयादि॒ह ॥
10. **ओ३म्** अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे ।दे॒वाँ२ऽआ सा॑दयादि॒ह ॥१७॥
11. **ओ३म्** अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम् । अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म् ॥
12. **ओ३म्** अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे हो॒तारं॑ वि॒श्ववे॑दसम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म् ॥
13. **ओ३म्** अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥
14. **ओ३म्** अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥
15. **ओ३म्** अ॒ग्निं धी॒भिर्म॑नी॒षिणो॒ मेधि॑रासो विप॒श्चितः॑ । अ॒द्म॒सद्या॑य हिन्विरे ॥
16. **ओ३म्** अ॒ग्निं म॒न्द्रं पु॑रुप्रि॒यं शी॒रं पा॑व॒कशो॑चिषम् । हृ॒द्भिर्म॒न्द्रेभि॑रीमहे ॥
17. **ओ३म्** अ॒ग्निं य॒न्तुर॑म॒प्तुर॑मृ॒तस्य॒ योगे॑ व॒नुषः॑ । विप्रा॒ वाजैः॒ समि॑न्धते ॥
18. **ओ३म्** अ॒ग्निं वि॒श्वायु॑वेपसं॒ मर्यं॒ न वा॒जिनं॑ हि॒तम् । सप्तिं॒ न वा॑जयामसि ॥
19. **ओ३म्** अग्निं वो॒ वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥
20. **ओ३म्** अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥
21. **ओ३म्** अ॒ग्निं सू॒नुं सन॑श्रुतं॒ सह॑सो जा॒तवे॑दसम् । वह्निं॑ दे॒वा अ॑कृण्वत ॥
22. **ओ३म्** अ॒ग्निं हि॑न्वन्तु नो॒ धियः॒ सप्ति॑मा॒शुमि॑वा॒जिषु॑ । तेन॑ जेष्म॒ धनं॑धनम् ॥
23. **ओ३म्** अ॒ग्निः परे॑षु॒ धाम॑सु॒ कामो॑ भू॒तस्य॒ भव्य॑स्य। स॒म्राडेको॒ वि रा॑जति ॥
24. **ओ३म्** अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्वꣳ स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे॥
25. **ओ३म्** अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको वि राजति ॥
26. **ओ३म्** अ॒ग्निः प्रि॒येषु॒ धाम॑सु॒ कामो॑ भू॒तस्य॒ भव्य॑स्य। स॒म्राडेको॒ विरा॑जति ॥११७॥
27. **ओ३म्** अ॒ग्निः शुचि॑व्रततमः॒ शुचि॒र्विप्रः॒ शुचिः॑ क॒विः । शुची॑ रोचत॒ आहु॑तः ॥
28. **ओ३म्** अग्निरृषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥
29. **ओ३म्** अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः॥

30. **ओ३म्** अ॒ग्निरृषि॑: पव॑मान॒: पाञ्च॑जन्यः पु॒रोहि॑तः । तमी॑महे महाग॒यम् ॥

31. **ओ३म्** अ॒ग्निना॑ र॒यिम॑श्नव॒त्पोष॑मे॒व दि॒वेदि॑वे । य॒शसं॑ वी॒रव॑त्तमम् ॥

32. **ओ३म्** अग्निर्नाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड्जुह्वास्यः ॥

33. **ओ३म्** अ॒ग्निम॑ग्निं॒ हवी॑मभि॒: सदा॑ हवन्त वि॒श्पति॑म् । ह॒व्य॒वाहं॑ पुरुप्रि॒यम् ॥

34. **ओ३म्** अ॒ग्निम॑ग्निं॒ हवी॑मभि॒: सदा॑ हवन्त वि॒श्पति॑म् । ह॑व्य॒वाहं॑ पुरुप्रि॒यम् ॥

35. **ओ३म्** अग्निमग्निꣳहवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥

36. **ओ३म्** अग्निमिन्धानो मनसा धियꣳ सचेत मर्त्यः । अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥

37. **ओ३म्** अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । रत्नधातमम् ॥

38. **ओ३म्** अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म् । होता॑रं रत्न॒धात॑मम् ॥

39. **ओ३म्** अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति । महिषीव वि जायते ॥

40. **ओ३म्** अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा । स यक्षद्दैव्यं जनम् ॥

41. **ओ३म्** अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥

42. **ओ३म्** अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥

43. **ओ३म्** अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

44. **ओ३म्** अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनद् द्रविण॒स्युर्वि॑प॒न्यया॑ ।समि॑द्धः शु॒क्रऽआहु॑तः ॥९॥

45. **ओ३म्** अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनद्द्रविण॒स्युर्वि॑प॒न्यया॑ । समि॑द्धः शु॒क्र आहु॑तः ॥

46. **ओ३म्** अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

47. **ओ३म्** अ॒ग्निर्होता॑ क॒विक्र॑तुः स॒त्यश्चि॒त्रश्र॑वस्तमः । दे॒वो दे॒वेभि॒रा ग॑मत् ॥

48. **ओ३म्** अ॒ग्निर्होता॑ नो अ॒ध्व॒रे वा॒जी सन्परि॑ णीयते । दे॒वो दे॒वेषु॑ य॒ज्ञियः॑ ॥

49. **ओ३म्** अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यꣳसद्विश्वं न्यऽत्रिणम् । अग्निर्नो वꣳसते रयिम् ॥

50. **ओ३म्** अग्निꣳ हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु । तेन जेष्म धनंधनम् ॥

51. **ओ३म्** अ॒ग्नी रक्षां॑सि सेधति शु॒क्रशो॑चि॒रम॑र्त्यः । शुचि॑: पाव॒क ईड्य॑: ॥

52. **ओ३म्** अग्नी॑षोमा॒ सवे॑दसा॒ सहू॑ती वनतं॒ गिर॑: । सं दे॑व॒त्रा ब॑भूवथुः ॥

53. **ओ३म्** अग्नी॑षोमाव॒नेन॑ वां॒ यो वां॑ घृ॒तेन॒ दाश॑ति । तस्मै॑ दीदयतं बृ॒हत् ॥

54. **ओ३म्** अग्नी॑षोमा॒वि॒मानि॑ नो यु॒वं ह॒व्या जु॑जोषतम् । आ या॑त॒मुप॑ न॒: सचा॑ ॥

55. **ओ३म्** अग्ने॑ के॒तुर्वि॒शाम॑सि॒ प्रेष्ठ॒: श्रेष्ठ॑ उपस्थ॒सत् । बो॒धा॑ स्तो॒त्रे वयो॒ दध॑त् ॥

56. **ओ३म्** अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥

57. **ओ३म्** अग्ने॑ घृ॒तस्य॑ धी॒तिभि॑स्तेपा॒नो दे॑व शो॒चिषा॑ । आ दे॒वान्व॑क्षि॒ यक्षि॑ च ॥

58. **ओ३म्** अग्ने॑ जु॒षस्व॑ नो ह॒विः पु॑रो॒ळाशं॑ जातवेदः । प्रा॒त॒:सा॒वे धि॑यावसो ॥

59. **ओ३म्** अग्ने॑ तम॒द्याश्वं॒ न स्तोमै॒: क्रतुं॒ न भ॒द्रं हृ॑दि॒स्पृश॑म् । ऋ॒ध्यामा॑ त॒ ओहै॑: ॥

60. **ओ३म्** अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम् । शिशीहि नः सूनुमतः ॥

61. **ओ३म्** अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥

62. **ओ३म्** अग्ने देवाꣳ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥

63. **ओ३म्** अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ॥

64. **ओ३म्** अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायेव सिन्धवः । गिरो वाश्रास ईरते ॥

65. **ओ३म्** अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यꣳ रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः॥

66. **ओ३म्** अग्ने नेमिरराँ इव देवाँस्त्वं परिभूरसि । आ राधश्चित्रमृञ्जसे ॥

67. **ओ३म्** अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये ॥

68. **ओ३म्** अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम् ॥

69. **ओ३म्** अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥

70. **ओ३म्** अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत । इमं स्तोमं जुषस्व मे ॥

71. **ओ३म्** अग्ने मृड महाꣳ असि य ईमा देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्॥

72. **ओ३म्** अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम् । इयेथ बर्हिरासदम् ॥

73. **ओ३म्** अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद्देवेषु गच्छति ॥

74. **ओ३म्** अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥

75. **ओ३म्** अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥

76. **ओ३म्** अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः । तपिष्ठैरजरो दह ॥

77. **ओ३म्** अग्ने रक्षा णो अꣳहसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥

78. **ओ३म्** अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे॥

79. **ओ३म्** अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उ चायवः ॥

80. **ओ३म्** अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम ॥

81. **ओ३म्** अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥

82. **ओ३म्** अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥

83. **ओ३म्** अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः । देवस्य द्रविणस्यवः ॥

84. **ओ३म्** अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये । अवावशन्त धीतयः ॥

85. **ओ३म्** अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयाꣳसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये॥

86. **ओ३म्** अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा । अग्नेः सख्यं वृणीमहे ॥

87. **ओ३म्** अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः॥

88. **ओ३म्** अधा त्वꣳ हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यꣳ सुक्षितीः। वाजद्रविणसो गिरः ॥

89. **ओ३म्** अधुक्षत्पिप्युषीमिषमूर्जं सप्तपदीमरिः । सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः ॥

90. **ओ३म्** अ॒न्तरि॑च्छन्ति॒ तं जने॑ रु॒द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑ । गृ॒भ्णन्ति॑ जि॒ह्वया॑ स॒सम् ॥

91. **ओ३म्** अ॒न्यम॒स्मद्भि॒या इ॒यमग्ने॒ सिष॑क्तु दु॒च्छुना॑ । वर्धा॑ नो॒ अम॑व॒च्छव॑: ॥

92. **ओ३म्** अप॑ नः॒ शोशु॑चद॒घमग्ने॑ शुशु॒ग्ध्या र॒यिम्। अप॑ नः॒ शोशु॑चद॒घम् ॥

93. **ओ३म्** अ॒भि त्वा॒ गोत॑मा गि॒रा जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे । द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नु॒मः ॥

94. **ओ३म्** अ॒भि प्र॒या॑ꣳसि॒ वाह॑सा दा॒श्वाꣳ॑ अश्नोति॒ मर्त्य॑ः । क्षयं॑ पाव॒कशो॑चिषः ॥

95. **ओ३म्** अ॒भ्य॑व॒स्थाः प्र जा॑यन्ते॒ प्र व॒व्रेर्व॒व्रिश्चि॑केत । उ॒पस्थे॑ मा॒तुर्वि च॑ष्टे ॥

96. **ओ३म्** अ॒भ्यार॒मिदद्र॒यो निषि॑क्तं॒ पुष्क॑रे॒ मधु॑ । अ॒वट॒स्य॑ वि॒सर्ज॑ने ॥

97. **ओ३म्** अ॒यं यः सृञ्ज॑ये पु॒रो दैव॑वा॒ते स॑मि॒ध्यते॑ । द्यु॒माँ अ॑मित्र॒दम्भ॑नः ॥

98. **ओ३म्** अ॒यं य॒था न आ॒भुव॒त्त्वष्टा॑ रू॒पेव॒ तक्ष्या॑ । अ॒स्य क्रत्वा॒ यश॑स्वतः ॥

99. **ओ३म्** अ॒यं विश्वा॑ अ॒भि श्रियो॒ऽग्निर्दे॒वेषु॑ पत्यते । आ वाजै॒रुप॑ नो गमत् ॥

100. **ओ३म्** अ॒वा नो अग्न ऊ॒तिभि॑र्गाय॒त्रस्य॒ प्रभ॑र्मणि । विश्वा॑सु धी॒षु व॑न्द्य ॥

101. **ओ३म्** अवो॑चाम॒ रहू॑गणा अ॒ग्नये॒ मधु॑म॒द्वच॑: । द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥

102. **ओ३म्** अश्वं॒ न त्वा॒ वार॑वन्तं व॒न्दध्या॑ अ॒ग्निं नमो॑भिः । स॒म्राज॑न्तमध्व॒राणा॑म् ॥

103. **ओ३म्** अश्वं॒ न त्वा॒ वार॑वन्तं व॒न्दध्या॑ अ॒ग्निं नमो॑भिः । स॒म्राज॑न्तमध्व॒राणा॑म् ॥

104. **ओ३म्** अश्वं॒ न त्वा॒ वार॑वन्तं व॒न्दध्या॑ अ॒ग्निं नमो॑भिः । स॒म्राज॑न्तमध्व॒राणा॑म् ॥

105. **ओ३म्** अ॒स्मे रायो॑ दि॒वेदि॑वे॒ सं च॑रन्तु पुरु॒स्पृह॑: । अ॒स्मे वाजा॑स ईरताम् ॥

106. **ओ३म्** अस्मै॑ ते प्रति॒हर्य॑ते॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे । अग्ने॒ जना॑मि सुष्टु॒तिम् ॥

107. **ओ३म्** अ॒स्य प्र जा॒तवे॑दसो॒ विप्र॑वीरस्य मी॒ळ्हुष॑: । म॒हीमि॑यर्मि सुष्टु॒तिम् ॥

108. **ओ३म्** अ॒स्य प्र॒त्नामनु॒ द्युत॑ꣳ शु॒क्रं दु॑दु॒ह्रेऽअह्र॑यः । पयः॑ सहस्र॒सामृषि॑म् ॥१६॥

109. **ओ३म्** आ ग्ना अ॑ग्न इ॒हाव॑से॒ होत्रां॑ यविष्ठ॒ भार॑तीम् । वरू॑त्रीं धि॒षणां॑ वह ॥

110. **ओ३म्** आ घा॒ ये अ॒ग्निमि॒न्धते॑ स्तृ॒णन्ति॑ ब॒र्हिरा॑नु॒षक्। येषा॒मिन्द्रो॒ युवा॒ सखा॑ ॥

111. **ओ३म्** आ च॒ वहा॑सि॒ ताँ इ॒ह दे॒वाँ उप॒ प्रश॑स्तये । ह॒व्या सु॑श्चन्द्र वी॒तये॑ ॥

112. **ओ३म्** आ ते॒ व॒त्सो मनो॒ यम॒त्पर॒मा॑च्चित्स॒धस्था॑त् । अग्ने॒ त्वां का॑मये॒ गिरा॑ ॥

113. **ओ३म्** आ ते॒ व॒त्सो मनो यमत्पर॒मा॑च्चित्स॒धस्था॑त् । अग्ने॒ त्वां का॑मये॒ गिरा॑ ॥

114. **ओ३म्** आ द॒शभि॒र्विव॑स्वत॒ इन्द्र॒: कोश॑मचुच्यवीत् । खेद॑या त्रि॒वृता॑ दि॒वः ॥

115. **ओ३म्** आ नो अग्ने र॒यिं भ॑र सत्रा॒साहं॒ वरे॑ण्यम् । विश्वा॑सु पृ॒त्सु दु॒ष्टर॑म् ॥

116. **ओ३म्** आ नो॑ अग्ने सुचे॒तुना॑ र॒यिं वि॒श्वायु॑पोषसम् । मा॒र्डी॒कं धे॑हि जी॒वसे॑ ॥

117. **ओ३म्** आ नो अग्ने सुचे॒तुना॑ र॒यिं वि॒श्वायु॑पोषसम् । मा॒र्डी॒कं धे॑हि जी॒वसे॑ ॥

118. **ओ३म्** आ नो॑ ब॒र्ही रि॒शाद॑सो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा । सीद॑न्तु॒ मनु॑षो यथा ॥

119. **ओ३म्** आ नो॑ भज पर॒मेष्वा वाजे॑षु मध्य॒मेषु॑ । शिक्षा॒ वस्वो॒ अन्त॑मस्य ॥

120. **ओ३म्** आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥

121. **ओ३म्** आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे । एन्द्रस्य जठरे विश ॥

122. **ओ३म्** आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः समुद्रमोजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

123. **ओ३म्** आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥

124. **ओ३म्** आ सुते सिञ्चत श्रियꣳरोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम्॥

125. **ओ३म्** आग्निरगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः । दिवोदासस्य सत्पतिः ॥

126. **ओ३म्** आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्धि खं वर्तया पणिम् ॥

127. **ओ३म्** आग्ने स्थूरꣳ रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अङ्धि खं वर्तया पविम्॥

128. **ओ३म्** आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि॥

129. **ओ३म्** आरोका इव घेदह तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्भिर्वनानि बप्सति ॥

130. **ओ३म्** इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् । अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥

131. **ओ३म्** इममू षु त्वमस्माकꣳ सनिं गायत्रं नव्याꣳसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥

132. **ओ३म्** इममू षु त्वमस्माकꣳ सनिं गायत्रं नव्याꣳसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥

133. **ओ३म्** इमां मे अग्ने समिधमिमामुपसदं वनेः । इमा उ षु श्रुधी गिरः ॥

134. **ओ३म्** ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमाꣳसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा॥

135. **ओ३म्** ईलेन्यो नमस्य(ः)स्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥

136. **ओ३म्** ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥

137. **ओ३म्** ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वःपतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि॥

138. **ओ३म्** उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥

139. **ओ३म्** उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति ॥

140. **ओ३म्** उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा । अग्ने सख्यस्य बोधि नः ॥

141. **ओ३म्** उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न आहुत । अङ्गिरस्वद्धवामहे ॥

142. **ओ३म्** उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते । गोष्ठं गाव इवाशत ॥

143. **ओ३म्** उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि । धनंजयो रणेरणे ॥

144. **ओ३म्** उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयो रणेरणे ॥

145. **ओ३म्** उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः । अग्ने शुक्रास ईरते ॥

146. **ओ३म्** उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः। अग्ने शुक्रास ईरते॥

147. **ओ३म्** उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर ॥

148. **ओ३म्** उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतीꣳष्यर्चयः ॥

149. **ओ३म्** उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

150. **ओ३म्** उप॑ च्छा॒यामि॑व॒ घृणे॒रग॑न्म॒ शर्म॑ ते व॒यम् । अग्ने॒ हिर॑ण्यसंदृशः ॥

151. **ओ३म्** उपच्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसन्दृशः॥

152. **ओ३म्** उप॑ त्वा जा॒मयो॒ गिरो॒ देदि॑शतीर्हवि॒ष्कृत॑ः । वा॒योरनी॑के अस्थिरन् ॥

153. **ओ३म्** उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥

154. **ओ३म्** उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥

155. **ओ३म्** उप त्वा जुह्वोऽ. मम घृताचीर्यन्तु हर्यत। अग्ने हव्या जुषस्व नः॥

156. **ओ३म्** उप॑ त्वा र॒ण्वसं॑दृशं॒ प्रय॑स्वन्तः सहस्कृत । अग्ने॑ ससृ॒ज्महे॒ गिर॑ः ॥

157. **ओ३म्** उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः॥

158. **ओ३म्** उप॑ त्वा सा॒तये॒ नरो॒ विप्रा॑सो यन्ति धी॒तिभि॑ः । उपाक्ष॑रा सह॒स्रिणी॑ ॥

159. **ओ३म्** उप॑ त्वाग्ने दि॒वेदि॑वे॒ दोषा॑वस्तर्धि॒या व॒यम् । नमो॒ भर॑न्त॒ एम॑सि ॥

160. **ओ३म्** उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥

161. **ओ३म्** उप॑ त्वाग्ने ह॒विष्म॑तीर्घृ॒ताचीर्यन्तु हर्यत। जु॒षस्व॑ स॒मिधो॒ मम॑॥४॥

162. **ओ३म्** उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्ना नमः स्वः ॥

163. **ओ३म्** उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते॥

164. **ओ३म्** ऊ॒र्जो॒ नपा॑तमध्व॒रे दी॑दि॒वांस॒मुप॒ द्यवि॑ । अ॒ग्निमी॑ळे क॒विक्र॑तुम् ॥

165. **ओ३म्** ऊर्ज्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन्यज्ञे स्वध्वरे॥

166. **ओ३म्** ऋ॒ताना॑नं वैश्वा॒नरमृ॒तस्य॒ ज्योति॑ष॒स्पति॑म्। अज॑स्रं घ॒र्ममी॑महे ॥

167. **ओ३म्** ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे॥

168. **ओ३म्** एते त्ये वृथ॑ग॒ग्नय॑ इ॒द्धास॑ः सम॑दृक्षत । उ॒षसा॑मिव के॒तव॑ः ॥

169. **ओ३म्** एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥

170. **ओ३म्** एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥

171. **ओ३म्** और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे। अग्निं समुद्रवाससम्॥

172. **ओ३म्** कया॑ ते अग्ने अङ्गिर॒ ऊर्जो॑ नपा॒दुप॑स्तुतिम् । वरा॑य देव म॒न्यवे॑ ॥

173. **ओ३म्** कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे॥

174. **ओ३म्** कया॑ नश्चि॒त्रऽ आ भु॑वदूती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑।कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता॥३९॥

175. **ओ३म्** क॒विम॒ग्निमुप॑ स्तुहि स॒त्यध॑र्माणमध्व॒रे । दे॒वम॑मीव॒चात॑नम् ॥

176. **ओ३म्** कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्॥

177. **ओ३म्** कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः॥

178. **ओ३म्** कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः॥

179. **ओ३म्** कस्य॑ नू॒नं परी॑णसो॒ धियो॑ जिन्वसि दम्पते । गोषा॑ता॒ यस्य॑ ते॒ गिर॑ः ॥

180. **ओ३म्** कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि॥

181. **ओ३म्** कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद्रोधति क्षमि ॥

182. **ओ३म्** क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते ॥

183. **ओ३म्** गर्भे मातुः पितुः पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा॥

184. **ओ३म्** गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

185. **ओ३म्** गायत्रं त्रैष्टुभं जगद्विश्वा रूपाणि सम्भृता। देवा ओकांसि चक्रिरे ॥

186. **ओ३म्** गाव उप वदावटे महि यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥

187. **ओ३म्** गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥

188. **ओ३म्** घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभावसुः ॥

189. **ओ३म्** जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥

190. **ओ३म्** जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्॥

191. **ओ३म्** जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्॥

192. **ओ३म्** जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते ॥

193. **ओ३म्** जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि ॥

194. **ओ३म्** तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया हव्यवाहं समीधिरे । यजिष्ठं मानुषे जने ॥

195. **ओ३म्** तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः ॥

196. **ओ३म्** तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम्॥

197. **ओ३म्** तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह॥

198. **ओ३म्** तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् । अग्ने घ्नन्तमप द्विषः ॥

199. **ओ३म्** तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य॥

200. **ओ३म्** तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् । वह्निं होतारमीळते ॥

201. **ओ३म्** तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् ॥

202. **ओ३म्** तं सबाधो यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये ॥

203. **ओ३म्** तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता । अग्निं हव्याय वोळ्हवे ॥

204. **ओ३म्** तमर्वन्तं न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम् । मित्रं न यातयज्जनम् ॥

205. **ओ३म्** तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम् ॥

206. **ओ३म्** तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

207. **ओ३म्** तमु त्वा वाजसातममङ्गिरस्वद्धवामहे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

208. **ओ३म्** तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूँरवधूनुषे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥

209. **ओ३म्** तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूप नित्यया । वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम् ॥

210. **ओ३म्** तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्ने कामाय येमिरे ॥

211. **ओ३म्** तुभ्यं ताऽअङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय येमिरे ॥११६॥

212. **ओ३म्** ते जानत स्वमोक्यꣳ. सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः॥

213. **ओ३म्** त्रिभिष्टं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः । अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥

214. **ओ३म्** त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥८॥

215. **ओ३म्** त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः॥

216. **ओ३म्** त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य॥

217. **ओ३म्** त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम् ॥

218. **ओ३म्** त्वमग्ने यज्ञानाꣳ होता विश्वेषाꣳ हितः। देवेभिर्मानुषे जने॥

219. **ओ३म्** त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥

220. **ओ३म्** त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥

221. **ओ३म्** त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥

222. **ओ३म्** दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः ॥

223. **ओ३म्** दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कदु वोच इदं नमः॥

224. **ओ३म्** दूतं वो विश्ववेदसꣳ हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥

225. **ओ३म्** द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय। अप नः शोशुचदघम् ॥

226. **ओ३म्** धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन्तरुणीरपि ॥

227. **ओ३म्** धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना ॥

228. **ओ३म्** न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥

229. **ओ३म्** न हि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां पते। अथा दुवो वनवसे ॥

230. **ओ३म्** नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥

231. **ओ३म्** नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः। युञ्जे वाचꣳ शतपदीम्॥

232. **ओ३म्** नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । अमैरमित्रमर्दय ॥

233. **ओ३म्** नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥

234. **ओ३म्** नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥

235. **ओ३म्** नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद्वनाति नः ॥

236. **ओ३म्** नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत॥

237. **ओ३म्** पदं देवस्य मीढुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्य इवोपदृक् ॥

238. **ओ३म्** परि त्रिधातुरध्वरं जूर्णिरेति नवीयसी । मध्वा होतारो अञ्जते ॥

239. **ओ३म्** परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

240. **ओ३म्** पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यꣳहसः॥

241. **ओ३म्** पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे॥

242. **ओ३म्** पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे ॥

243. **ओ३म्** पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे ॥

244. **ओ३म्** प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥

245. **ओ३म्** प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम् । आ स्वे योनौ नि षीदतु ॥

246. **ओ३म्** प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिरासदे ॥

247. **ओ३म्** प्र यत्ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम् । अप नः शोशुचदघम् ॥

248. **ओ३म्** प्र यत्ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम्। अप नः शोशुचदघम् ॥

249. **ओ३म्** प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः । अप नः शोशुचदघम् ॥

250. **ओ३म्** प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः। अप नः शोशुचदघम् ॥

251. **ओ३म्** प्र यद्भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकासश्च सूरयः। अप नः शोशुचदघम् ॥

252. **ओ३म्** प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया । अर्च गाय च वेधसे ॥

253. **ओ३म्** प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

254. **ओ३म्** प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥

255. **ओ३म्** प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः ॥

256. **ओ३म्** प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम् ॥

257. **ओ३म्** प्रेष्ठं वो अतिथिꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्॥

258. **ओ३म्** ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे । अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥

259. **ओ३म्** ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥

260. **ओ३म्** मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् ॥

261. **ओ३म्** मन्द्रꣳ होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्। अग्निमीडे स उ श्रवत् ॥

262. **ओ३म्** महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द ओजिष्ठः । युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ ॥

263. **ओ३म्** मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्गꣳ सꣳ रयिं जय ॥

264. **ओ३म्** मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा । संवर्गं सं रयिं जय ॥

265. **ओ३म्** य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन्। ऋतूनुत्सृजते वशी॥

266. **ओ३म्** य इङ्खयन्ति पर्वतान्तिरः समुद्रमर्णवम् । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

267. **ओ३म्** य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः । अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥

268. **ओ३म्** य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वꣳसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥

269. **ओ३म्** य उग्रा अर्कमानृचुरनाधृष्टास ओजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

270. **ओ३म्** य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान् ॥

271. **ओ३म्** यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥

272. **ओ३म्** यं त्वं विप्र मेधसातावग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता ॥

273. **ओ३म्** यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम् ॥

274. **ओ३म्** यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम । अग्ने स बोधि मे वचः ॥

275. **ओ३म्** यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा ॥

276. **ओ३म्** यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः ॥

277. **ओ३म्** यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते। स नः पर्षदति द्विषः ॥

278. **ओ३म्** यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्॥

279. **ओ३म्** यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः॥

280. **ओ३म्** यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाꣳ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥

281. **ओ३म्** यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः । ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥

282. **ओ३म्** यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्र योनिं कृणवसे॥

283. **ओ३म्** यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ॥

284. **ओ३म्** यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः॥

285. **ओ३म्** ययां गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये॥

286. **ओ३म्** यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव ॥

287. **ओ३म्** यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति। तस्य स्म प्राविता भव॥

288. **ओ३म्** यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम्॥

289. **ओ३म्** यस्याजुषन्नमस्विनः शमीमदुर्मखस्य वा । तं घेदग्निर्वृधावति ॥

290. **ओ३म्** या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु ॥

291. **ओ३म्** युञ्जे वाचꣳ शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्॥

292. **ओ३म्** युवानं विश्पतिं कविं विश्वादं पुरुवेपसम् । अग्निं शुम्भामि मन्मभिः ॥

293. **ओ३म्** ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

294. **ओ३म्** ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

295. **ओ३म्** ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः । मरुद्भिरग्न आ गहि ॥

296. **ओ३म्** यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृळय ॥

297. **ओ३म्** यो अग्निं देववीतये हविष्माꣳ आविवासति। तस्मै पावक मृडय ॥

298. **ओ३म्** यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः ॥

299. **ओ३म्** यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः ॥

300. **ओ३म्** यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति । तस्मान्नः पाह्यंहसः ॥

301. **ओ३म्** यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरी च युक्ता सुधुरा ददाति । वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानोऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म ॥

302. **ओ३म्** यो रक्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः ॥

303. **ओ३म्** यो रक्षांसि निजूर्वत्यग्निस्तिग्मेन शोचिषा। स नः पर्षदति द्विषः ॥

304. **ओ३म्** यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः ॥

305. **ओ३म्** यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः ॥

306. **ओ३म्** रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणेसधस्थमासदत्॥२६॥

307. **ओ३म्** वाजयन्निव नू रथान्योगाँ अग्नेरुप स्तुहि । यशस्तमस्य मीळ्हुषः ॥

308. **ओ३म्** वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः॥

309. **ओ३म्** विद्मा हि ते पुरा वयमग्ने पितुर्यथावसः । अधा ते सुम्नमीमहे ॥

310. **ओ३म्** विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावसुम् । यज्ञानां केतुमीमहे ॥

311. **ओ३म्** विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥

312. **ओ३म्** विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाके आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि॥

313. **ओ३म्** विशां राजानमद्भुतमध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् ॥

314. **ओ३म्** विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः । चनो धाः सहसो यहो ॥

315. **ओ३म्** विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमंयज्ञमिदं वचः । चनो धाः सहसा यहो॥

316. **ओ३म्** वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥

317. **ओ३म्** वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं२ समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥

318. **ओ३म्** वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥

319. **ओ३म्** वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥

320. **ओ३म्** वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते ॥

321. **ओ३म्** वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं२ हविष्मन्त ईडते॥

322. **ओ३म्** वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥

323. **ओ३म्** शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

324. **ओ३म्** स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥

325. **ओ३म्** स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः। मीढ्वां२अस्माकं बभूयात्॥

326. **ओ३म्** स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् । अग्ने वीरवतीमिषम् ॥

327. **ओ३म्** स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः । शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ॥

328. **ओ३म्** स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद्विभानवा वह ॥

329. **ओ३म्** स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम् ॥

330. **ओ३म्** स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि । बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥

331. **ओ३म्** स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये । अप नः शोशुचदघम् ॥

332. **ओ३म्** स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥

333. **ओ३म्** स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥

334. **ओ३म्** स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥

335. **ओ३म्** स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । धिये वाजाय हिन्वतु ॥

336. **ओ३म्** स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः । धिये वाजाय हिन्वतु ॥

337. **ओ३म्** स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा । देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥

338. **ओ३म्** स नो विश्वेभिर्देवेभिरूर्जो नपाद्भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववारम् ॥

339. **ओ३म्** स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः ॥

340. **ओ३म्** स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः । उतास्मान्पात्वंहसः ॥

341. **ओ३म्** स रेवाँ इव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः । उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥

342. **ओ३म्** स रेवाँ इव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः । उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥

343. **ओ३म्** स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ॥

344. **ओ३म्** स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ॥

345. **ओ३म्** स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक् । आ चास्मिन्त्सत्सि बर्हिषि ॥

346. **ओ३म्** स विश्वा प्रति चाक्लृप ऋतूंरुत्सृजते वशी । यज्ञस्य वयं उत्तिरन् ॥

347. **ओ३म्** स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे । दाति प्रियाणि चिद्वसु ॥

348. **ओ३म्** स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति ॥

349. **ओ३म्** स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् ॥

350. **ओ३म्** स हि यो मानुषा युगा सीदद्धोता कविक्रतुः । दूतश्च हव्यवाहनः ॥

351. **ओ३म्** स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन्महित्वना । वन्वन्नवातो अस्तृतः ॥

352. **ओ३म्** स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः । स देवाँ एह वक्षति ॥

353. **ओ३म्** समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे । वाजेषु चित्रराधसम् ॥

354. **ओ३म्** समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥

355. **ओ३म्** समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥१॥

356. **ओ३म्** समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥३०॥

357. **ओ३म्** सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया । विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि ॥

358. **ओ३म्** साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥

359. **ओ३म्** साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥
360. **ओ३म्** सिञ्चन्ति नमसावतमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनबारमक्षितम् ॥
361. **ओ३म्** सिञ्चन्ति नमसावतमुच्चाचक्रं परिज्मानम् । नीचीनबारमक्षितम् ॥
362. **ओ३म्** सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे । अप नः शोशुचदघम् ॥
363. **ओ३म्** सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे। अप नः शोशुचदघम् ॥
364. **ओ३म्** सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे । जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥
365. **ओ३म्** सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे ॥२॥
366. **ओ३म्** सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः ॥
367. **ओ३म्** स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा । अग्रे यज्ञस्य शोचतः ॥
368. **ओ३म्** हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि । यतन्ते वृथगग्नयः ॥
369. **ओ३म्** हविष्कृणुध्वमा गमदध्वर्युर्वनते पुनः । विद्वाँ अस्य प्रशासनम् ॥
370. **ओ३म्** होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन्॥
371. **ओ३म्** हरयो धूमकेतवो वातजूताऽउप द्यवि। यतन्ते वृथगग्नयः॥

2. अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः

372. **ओ३म्** मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥
373. **ओ३म्** यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतमशीमहि ॥

3. अपांनपात् सोम आपश्च देवताः

374. **ओ३म्** अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः ॥
375. **ओ३म्** अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम् ॥
376. **ओ३म्** अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥
377. **ओ३म्** अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः ॥
378. **ओ३म्** आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम। ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥
379. **ओ३म्** आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥
380. **ओ३म्** तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥
381. **ओ३म्** यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥
382. **ओ३म्** शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

4. अम्बा देवता

383. **ओ३म्** मा सु भित्था मा सु रिषोऽम्ब धृष्णु वीरयस्व सु। अग्निश्चेदं करिष्यथः॥

5. अश्विनौ

384. **ओ३म्** अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः ॥

385. **ओ३म्** अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

386. **ओ३म्** अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

387. **ओ३म्** अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

388. **ओ३म्** अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती । पुरुभुजा चनस्यतम् ॥

389. **ओ३म्** अश्विना सु विचाकशद्वृक्षं परशुमाँ इव । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

390. **ओ३म्** अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरि चाकन ॥

391. **ओ३म्** अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम् । पुरुक्षुं विश्वधायसम् ॥

392. **ओ३म्** आ नः स्तोममुप द्रवत्तूयं श्येनेभिराशुभिः । यातमश्वेभिरश्विना ॥

393. **ओ३म्** आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् । वोळ्हमश्वावतीरिषः ॥

394. **ओ३म्** इहा गतं वृषण्वसू शृणुतं म इमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

395. **ओ३म्** उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा । वि पथः सातये सितम् ॥

396. **ओ३म्** उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

397. **ओ३म्** एतावद्वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्नमीमहे ॥

398. **ओ३म्** ऐषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥

399. **ओ३म्** किमिदं वां पुराणवज्जरतोरिव शस्यते । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

400. **ओ३म्** कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

401. **ओ३म्** गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

402. **ओ३म्** जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः । युवां हवन्ते अश्विना ॥

403. **ओ३म्** तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥

404. **ओ३म्** ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ॥

405. **ओ३म्** ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद्वां वृषण्वसू हुवे ॥

406. **ओ३म्** तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ॥

407. **ओ३म्** तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः ॥

408. **ओ३म्** त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

409. **ओ३म्** दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः । आ यातं रुद्रवर्तनी ॥

410. **ओ३म्** दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः ।आ यात२ रुद्रवर्त्तनी ॥ तं प्रत्नथा। अयं वेनः ॥५८ ॥

411. **ओ३म्** दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वथातनत् ॥

412. **ओ३म्** नहि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः । अश्विना सोमिनो गृहम् ॥

413. **ओ३म्** निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥

414. **ओ३म्** नृवद्दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ॥

415. ओ३म् पुरं न धृष्णवा रुज कृष्णया बाधितो विशा । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
416. ओ३म् पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना गतम् ॥
417. ओ३म् पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू । स्तुषे कण्वासो अश्विना ॥
418. ओ३म् प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥
419. ओ३म् प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे। प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥
420. ओ३म् प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
421. ओ३म् यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना ॥
422. ओ३म् यदद्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम् । अन्ति षद्भूतु वामवः ॥
423. ओ३म् यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥
424. ओ३म् यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥
425. ओ३म् यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः। यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥
426. ओ३म् या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देवा वसुविदा॥
427. ओ३म् या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥
428. ओ३म् युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ॥
429. ओ३म् युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदृक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे ॥
430. ओ३म् युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः ॥
431. ओ३म् ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः। एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥
432. ओ३म् येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रीँरक्तून्परिदीयथः ॥
433. ओ३म् यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना ॥
434. ओ३म् रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ॥
435. ओ३म् रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥
436. ओ३म् वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥
437. ओ३म् वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि। यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥
438. ओ३म् श्रृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥

6. असमाती राजा

439. ओ३म् आ जनं त्वेषसंदृशं माहीनानामुपस्तुतम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥
440. ओ३म् असमातिं नितोशनं त्वेषं निययिनं रथम् । भजेरथस्य सत्पतिम् ॥
441. ओ३म् यो जनान्महिषाँ इवातितस्थौ पवीरवान् । उतापवीरवान्युधा ॥

7. आत्मस्तुतिः

442. ओ३म् अभि द्यां महिना भुवमभी३३मां पृथिवीं महीम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

443. **ओ३म्** अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

444. **ओ३म्** इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

445. **ओ३म्** उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

446. **ओ३म्** उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम् । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

447. **ओ३म्** ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

448. **ओ३म्** नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

449. **ओ३म्** प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

450. **ओ३म्** हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित्सोमस्यापामिति ॥

8. आत्मा सूर्यो वा

451. **ओ३म्** अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥

452. **ओ३म्** आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

453. **ओ३म्** त्रिꣳशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥

9. आदित्यः

454. **ओ३म्** अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकाय जीवसे ॥

455. **ओ३म्** उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते ॥

456. **ओ३म्** तत्सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति । बन्धाद्बद्धमिवादिते ॥

457. **ओ३म्** ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इषꣳस्वश्च धीमहि ॥

458. **ओ३म्** नास्माकमस्ति तत्तर आदित्यासो अतिष्कदे । यूयमस्मभ्यं मृळत ॥

459. **ओ३म्** पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । माकिस्तोकस्य नो रिषत् ॥

460. **ओ३म्** प्रति वाꣳसूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणꣳ रिशादसम् ॥

461. **ओ३म्** मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि । इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ॥

462. **ओ३म्** मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः । पुरा नु जरसो वधीत् ॥

463. **ओ३म्** यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ॥

464. **ओ३म्** यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवाति सविता भगः ॥

465. **ओ३म्** यद्वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः । तेना नो अधि वोचत ॥

466. **ओ३म्** राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेधसातये ॥

467. **ओ३म्** शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम् । पुरा नूनं बुभुज्महे ॥

468. **ओ३म्** शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः । देवाः कृणुथ जीवसे ॥

469. **ओ३म्** सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ॥

470. **ओ३म्** सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः । ये नो अꣳहोऽतिपिप्रति ॥

10. आपः

471. **ओ३म्** अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशम्भुवम् ॥
472. **ओ३म्** अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥
473. **ओ३म्** आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहै ॥
474. **ओ३म्** आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥
475. **ओ३म्** आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥
476. **ओ३म्** आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥
477. **ओ३म्** आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥
478. **ओ३म्** तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः॥
479. **ओ३म्** तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥
480. **ओ३म्** तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।आपो जनयथा च नः॥
481. **ओ३म्** तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥
482. **ओ३म्** यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥
483. **ओ३म्** यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥
484. **ओ३म्** यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥
485. **ओ३म्** यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥
486. **ओ३म्** वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युजः सखा॥
487. **ओ३म्** शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः॥
488. **ओ३म्** शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

11. आप्रियः

489. **ओ३म्** उदातैर्जिहते बृहद्द्वारो देवीर्हिरण्ययीः । पवमानेन सुष्टुताः ॥
490. **ओ३म्** तनूनपात्पवमानः शृङ्गे शिशानो अर्षति । अन्तरिक्षेण रारजत् ॥
491. **ओ३म्** तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते । दधत्सहस्रिणीरिषः ॥
492. **ओ३म्** त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून्विश्वान्त्समानजे । तेषां नः स्फातिमा यज ॥
493. **ओ३म्** देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन ॥
494. **ओ३म्** पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते । स्वाहाकृतीषु रोचते ॥
495. **ओ३म्** प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् । यत्रादित्या विराजथ ॥
496. **ओ३म्** बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः । देवेषु देव ईयते ॥
497. **ओ३म्** भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे । ता नश्चोदयत श्रिये ॥
498. **ओ३म्** यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय ॥

499. **ओ३म्** वातस्य पत्मन्नीळिता दैव्या होतारा मनुषः । इमं नो यज्ञमा गतम् ॥
500. **ओ३म्** शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव ॥
501. **ओ३म्** समिद्धो विश्वतस्पतिः पवमानो वि राजति । प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् ॥
502. **ओ३म्** सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा । दोषामुषासमीमहे ॥
503. **ओ३म्** सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति । नक्तोषासा न दर्शते ॥
504. **ओ३म्** सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ॥

12. इडादयो लिङ्गोक्ता देवताः

505. **ओ३म्** तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳ सदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना॥

13. इध्मः समिद्धौ वाग्निः

506. **ओ३म्** सुषमिद्धो न आ वह देवाꣳ अग्ने हविष्मते। होतः पावक यक्षि च॥
507. **ओ३म्** सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च ॥

14. इन्द्र

508. **ओ३म्** एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। पतयन्मन्दयत्सखम् ॥
509. **ओ३म्** अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्। यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥
510. **ओ३म्** अग्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥
511. **ओ३म्** अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥
512. **ओ३म्** अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥
513. **ओ३म्** अग्नऽआयूꣳषि पवसऽआ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥३८॥
514. **ओ३म्** अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति । यतो विपान एजति ॥
515. **ओ३म्** अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया॥
516. **ओ३म्** अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब ॥
517. **ओ३म्** अतीहि मन्युषाविणꣳ सुषुवाꣳसमुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब॥
518. **ओ३म्** अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥
519. **ओ३म्** अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥
520. **ओ३म्** अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥
521. **ओ३म्** अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि ॥
522. **ओ३म्** अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि ॥
523. **ओ३म्** अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि ॥
524. **ओ३म्** अद्य नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुष्वप्न्यꣳ सुव॥
525. **ओ३म्** अधा ते अप्रतिष्कुतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी ॥

526. **ओ३म्** अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं वीराय शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये ॥
527. **ओ३म्** अध्वर्योऽअद्रिभिः सुत१ सोमं पवित्रऽआ नय । पुनाहीन्द्राय पातवे ॥३१ ॥
528. **ओ३म्** अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥
529. **ओ३म्** अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥
530. **ओ३म्** अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥
531. **ओ३म्** अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम् । अनु सुवानास इन्दवः ॥
532. **ओ३म्** अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥
533. **ओ३म्** अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥
534. **ओ३म्** अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥
535. **ओ३म्** अपां फेनेन नमुचे शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजय स्पृधः ॥
536. **ओ३म्** अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः ॥
537. **ओ३म्** अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः ॥
538. **ओ३म्** अपां फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोदवर्त्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः ॥७१ ॥
539. **ओ३म्** अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इन्द्रोरिन्द्रो यवाशिरः ॥
540. **ओ३म्** अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥
541. **ओ३म्** अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥
542. **ओ३म्** अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥
543. **ओ३म्** अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे । तत्राददिष्ट पौंस्यम् ॥
544. **ओ३म्** अभि गन्धर्वमतृणदबुध्नेषु रजस्स्वा । इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद्वृधे ॥
545. **ओ३म्** अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये ॥
546. **ओ३म्** अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥
547. **ओ३म्** अभि त्वा वृषभा सुते सुत१ सृजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥
548. **ओ३म्** अभि त्वा वृषभा सुते सुत१सृजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥
549. **ओ३म्** अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥
550. **ओ३म्** अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥
551. **ओ३म्** अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥
552. **ओ३म्** अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥
553. **ओ३म्** अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनु१ सत्यस्य सत्पतिम् ॥
554. **ओ३म्** अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनु१ सत्यस्य सत्पतिम् ॥
555. **ओ३म्** अभि व्रजं न तत्निषे सूर उपाकचक्षसम् । यदिन्द्र मृळयासि नः ॥

556. **ओ३म्** अभ्रातृव्योऽअना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे ॥

557. **ओ३म्** अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥

558. **ओ३म्** अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥

559. **ओ३म्** अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥

560. **ओ३म्** अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते । तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥

561. **ओ३म्** अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः । आर्जीकीये मदिन्तमः ॥

562. **ओ३म्** अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शंतमः । अथा सोमं सुतं पिब ॥

563. **ओ३म्** अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः । वज्रेण शतपर्वणा ॥

564. **ओ३म्** अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

565. **ओ३म्** अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

566. **ओ३म्** अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

567. **ओ३म्** अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥

568. **ओ३म्** अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥

569. **ओ३म्** अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः। प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥

570. **ओ३म्** अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत । यत्सोमेसोम आभवः ॥

571. **ओ३म्** अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत्सोमेसोम आभुवः ॥

572. **ओ३म्** अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

573. **ओ३म्** अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

574. **ओ३म्** अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन् । अरं धामभ्य इन्दवः ॥

575. **ओ३म्** अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः ॥

576. **ओ३म्** अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरं शक्र परेमणि ॥

577. **ओ३म्** अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥

578. **ओ३म्** अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः ॥

579. **ओ३म्** अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो। इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः ॥

580. **ओ३म्** अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः । सोमानामिन्द्र सोमपाः ॥

581. **ओ३म्** अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिरासदे ॥

582. **ओ३म्** अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना। घृतस्नू बर्हिरासदे ॥

583. **ओ३म्** अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः ॥

584. **ओ३म्** अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्। इमा जुषस्व नो गिरः ॥

585. **ओ३म्** अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः। उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥

586. **ओ३म्** अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित्परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि ॥

587. **ओ३म्** अविप्रे चिद्वयो दधदनाशुना चिदर्वता । इन्द्रो जेता हितं धनम् ॥

588. **ओ३म्** असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः। सोमपा उत्तरो भवन् ॥

589. **ओ३म्** असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम् ॥

590. **ओ३म्** असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम् ॥

591. **ओ३म्** असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। संजोषा वृषभं पतिम्॥

592. **ओ३म्** अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना॥

593. **ओ३म्** अस्माँ अवन्तु ते शतमस्मान्त्सहस्रमूतयः । अस्मान्विश्वा अभिष्टयः ॥

594. **ओ३म्** अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः । शतं वहन्तु हरयः ॥

595. **ओ३म्** अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते ॥

596. **ओ३म्** अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये । न यं धूर्वन्ति धूर्तयः ॥

597. **ओ३म्** अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान्राये महे हिनु ॥

598. **ओ३म्** अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः ॥

599. **ओ३म्** अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥

600. **ओ३म्** अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम्। इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥

601. **ओ३म्** अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः । प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥

602. **ओ३म्** अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः। प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥

603. **ओ३म्** अस्वापयद्दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । दासानामिन्द्रो मायया ॥

604. **ओ३म्** अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे॥

605. **ओ३म्** अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥

606. **ओ३म्** अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥

607. **ओ३म्** अहन्वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम् । हिमेनाविध्यदर्बुदम् ॥

608. **ओ३म्** अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि ॥

609. **ओ३म्** अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि ॥

610. **ओ३म्** अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रहे। अहं सूर्य इवाजनि॥

611. **ओ३म्** अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रहे। अहं सूर्य इवाजनि॥

612. **ओ३म्** आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः। ऋणोरक्षं न चक्रयोः॥

613. **ओ३म्** आ घ त्वावान्त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योः ॥

614. **ओ३म्** आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥

615. **ओ३म्** आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम् ॥

616. **ओ३म्** आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥

617. **ओ३म्** आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

618. **ओ३म्** आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः । रथे वहन्तु बिभ्रतः ॥

619. **ओ३म्** आ त एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा । यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः ॥

620. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन ॥

621. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभꣳ सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन ॥

622. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभꣳ सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन ॥

623. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र मद्र्यग्घुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥

624. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥

625. **ओ३म्** आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥

626. **ओ३म्** आ तू नऽइन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गहि ।महान् महीभिरूतिभिः ॥६५ ॥

627. **ओ३म्** आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत ॥

628. **ओ३म्** आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु ॥

629. **ओ३म्** आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे । इन्द्र सोमस्य पीतये ॥

630. **ओ३म्** आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥

631. **ओ३म्** आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥

632. **ओ३म्** आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥

633. **ओ३म्** आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥

634. **ओ३म्** आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥

635. **ओ३म्** आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररभ्मा शवसस्पते । उश्मसि त्वा सधस्थ आ ॥

636. **ओ३म्** आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसः ॥

637. **ओ३म्** आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥

638. **ओ३म्** आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥

639. **ओ३म्** आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥

640. **ओ३म्** आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः ॥

641. **ओ३म्** आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः ॥

642. **ओ३म्** आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः ॥

643. **ओ३म्** आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजाꣳसि सुक्रतू ॥

644. **ओ३म्** आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप । पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः ॥

645. **ओ३म्** आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥

646. **ओ३म्** आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥

647. **ओ३म्** आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥

648. **ओ३म्** आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥

649. **ओ३म्** आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो । गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ॥

650. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥

651. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

652. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

653. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥

654. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

655. **ओ३म्** आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

656. **ओ३म्** आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महा२ इव युवजानिः॥

657. **ओ३म्** आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मं२हिष्ठ२सिञ्च इन्दुभिः॥

658. **ओ३म्** आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥

659. **ओ३म्** आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥

660. **ओ३म्** आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥

661. **ओ३म्** आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे॥

662. **ओ३म्** आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवा ॥

663. **ओ३म्** आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम् । ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥

664. **ओ३म्** आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा ॥

665. **ओ३म्** इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति ॥

666. **ओ३म्** इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥

667. **ओ३म्** इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥

668. **ओ३म्** इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति॥

669. **ओ३म्** इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः ॥

670. **ओ३म्** इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि। इन्द्रं महो वा रजसः ॥

671. **ओ३म्** इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमा ते॥

672. **ओ३म्** इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन्ररिमा ते॥

673. **ओ३म्** इदं२ ह्यन्वोजसा सुतं२ राधानां पते। पिबा त्वाऽ३स्य गिर्वणः॥

674. **ओ३म्** इदं२ह्यन्वोजसा सुतं२राधानां पते। पिबा त्वास्य गिर्वणः॥

675. **ओ३म्** इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥

676. **ओ३म्** इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥
677. **ओ३म्** इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
678. **ओ३म्** इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
679. **ओ३म्** इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
680. **ओ३म्** इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
681. **ओ३म्** इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
682. **ओ३म्** इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ॥
683. **ओ३म्** इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम् ॥
684. **ओ३म्** इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम् ॥
685. **ओ३म्** इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुतानां सखा ॥
686. **ओ३म्** इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत । पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥
687. **ओ३म्** इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥
688. **ओ३म्** इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥
689. **ओ३म्** इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः ॥
690. **ओ३म्** इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥
691. **ओ३म्** इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥
692. **ओ३म्** इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः ॥
693. **ओ३म्** इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि। जयेम सं युधि स्पृधः ॥
694. **ओ३म्** इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्वियावती ॥
695. **ओ३म्** इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विश्पते ॥
696. **ओ३म्** इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः। तिर स्तवान विश्पते ॥
697. **ओ३म्** इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित्सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि ॥
698. **ओ३म्** इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा। वृत्राणि वृत्रहं जहि ॥
699. **ओ३म्** इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं सनुहि ॥
700. **ओ३म्** इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥
701. **ओ३म्** इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥
702. **ओ३म्** इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥
703. **ओ३म्** इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य गोमतः । वि पीतिं तृप्तिमश्नुहि ॥
704. **ओ३म्** इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥
705. **ओ३म्** इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो ॥

706. **ओ३म्** इन्द्र॒ सोमा॑: सु॒ता इ॒मे तव॒ प्र य॑न्ति सत्पते। क्षयं॑ च॒न्द्रास॒ इन्द॑वः ॥
707. **ओ३म्** इन्द्र॒ सोमा॑: सु॒ता इ॒मे तान्द॑धिष्व शतक्रतो। ज॒ठरे॑ वाजिनीवसो ॥
708. **ओ३म्** इन्द्र॒: स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठ॒: स मदे॑ हि॒तः । द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः ॥
709. **ओ३म्** इन्द्रं॑ प्र॒त्नेन॒ मन्म॑ना म॒रुत्व॑न्तं हवामहे । अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये॑ ॥
710. **ओ३म्** इन्द्रं॑ व॒यं म॑हाध॒न इन्द्र॒मर्भे॑ हवामहे । युजं॑ वृ॒त्रेषु॑ व॒ज्रिण॑म् ॥
711. **ओ३म्** इन्द्रं॑ व॒यं म॑हाध॒न इन्द्र॒मर्भे॑ हवामहे। युजं॑ वृ॒त्रेषु॑ व॒ज्रिण॑म् ॥
712. **ओ३म्** इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्॥
713. **ओ३म्** इन्द्रं॑ वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे पुरुहू॒तमुप॑ ब्रुवे । भरे॑षु॒ वाज॑सातये ॥
714. **ओ३म्** इन्द्रं॑ वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे पुरुहू॒तमुप॑ ब्रुवे। भरे॑षु॒ वाज॑सातये ॥
715. **ओ३म्** इन्द्रं॑ वो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः ॥
716. **ओ३म्** इन्द्रं॑ वो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः ॥
717. **ओ३म्** इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥
718. **ओ३म्** इन्द्रं॒ सोम॑स्य पी॒तये॒ स्तोमै॑रि॒ह ह॑वामहे । उ॒क्थेभि॑: कु॒वि॒दा॒गम॑त् ॥
719. **ओ३म्** इन्द्रं॒ सोम॑स्य पी॒तये॒ स्तोमै॑रि॒ह ह॑वामहे। उ॒क्थेभि॑: कु॒वि॒दा॒गम॑त् ॥
720. **ओ३म्** इन्द्र॒: स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठ॒: स मदे॑ हि॒तः। द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः ॥
721. **ओ३म्** इन्द्र॒: स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठ॒: स मदे॑ हि॒तः। द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः ॥
722. **ओ३म्** इन्द्र॒मित्के॒शिना॒ हरी॑ सोम॒पेया॑य वक्षतः । उप॑ य॒ज्ञं सु॒राध॑सम् ॥
723. **ओ३म्** इन्द्र॒मित्के॒शिना॒ हरी॑ सोम॒पेया॑य वक्षतः। उप॑ य॒ज्ञं सु॒राध॑सम् ॥
724. **ओ३म्** इन्द्र॑मि॒त्था गिरो॒ ममाच्छा॑गुरिषि॒ता इ॒तः। आ॒वृते॒ सोम॑पीतये ॥
725. **ओ३म्** इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किण॑: । इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥
726. **ओ३म्** इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किण॑:। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥
727. **ओ३म्** इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किण॑:। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥
728. **ओ३म्** इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किण॑:। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥
729. **ओ३म्** इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत॥
730. **ओ३म्** इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत॥
731. **ओ३म्** इन्द्र॑मु॒क्थानि॑ वावृधुः समु॒द्रमि॑व॒ सिन्ध॑वः । अनु॑त्तमन्युम॒जर॑म् ॥
732. **ओ३म्** इन्द्र॑श्च मृ॒डया॑ति नो॒ न न॑: प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥
733. **ओ३म्** इन्द्र॑श्च मृ॒लया॑ति नो॒ न न॑: प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥
734. **ओ३म्** इन्द्र॑श्च मृ॒ळया॑ति नो॒ न न॑: प॒श्चाद॒घं न॑शत् । भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥
735. **ओ३म्** इन्द्र॑श्चिद्घा॒ तद॑ब्रवीत्स्त्रि॒या अ॑शा॒स्यं मन॑: । उ॒तो अह॒ क्रतुं॑ र॒घुम् ॥

736. **ओ३म्** इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये ॥

737. **ओ३म्** इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः ॥

738. **ओ३म्** इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः ॥

739. **ओ३म्** इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ॥

740. **ओ३म्** इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥

741. **ओ३म्** इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥

742. **ओ३म्** इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजुतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

743. **ओ३म्** इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

744. **ओ३म्** इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

745. **ओ३म्** इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु । यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

746. **ओ३म्** इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

747. **ओ३म्** इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

748. **ओ३म्** इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥

749. **ओ३म्** इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

750. **ओ३म्** इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

751. **ओ३म्** इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

752. **ओ३म्** इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

753. **ओ३म्** इन्द्रायाहि तूतुजानऽउप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥८९॥

754. **ओ३म्** इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥८८॥

755. **ओ३म्** इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

756. **ओ३म्** इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

757. **ओ३म्** इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे ॥

758. **ओ३म्** इन्द्रेण मन्युना वयमभि ष्याम पृतन्यतः। घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति ॥

759. **ओ३म्** इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे ॥

760. **ओ३म्** इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे ॥

761. **ओ३म्** इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥

762. **ओ३म्** इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा ॥

763. **ओ३म्** इन्द्रेण संहि दृक्षसे सजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्च्चसा ॥

764. **ओ३म्** इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥

765. **ओ३म्** इन्द्रेहित्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महां अभिष्टिरोजसा ॥

766. **ओ३म्** इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥
767. **ओ३म्** इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥
768. **ओ३म्** इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥
769. **ओ३म्** इन्द्रो अङ्गं महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥
770. **ओ३म्** इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥
771. **ओ३म्** इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥
772. **ओ३म्** इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥
773. **ओ३म्** इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥
774. **ओ३म्** इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥
775. **ओ३म्** इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥
776. **ओ३म्** इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥
777. **ओ३म्** इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यꣳरोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥
778. **ओ३म्** इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥
779. **ओ३म्** इमे उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥
780. **ओ३म्** इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा । मरुत्वन्तं न वृञ्जसे ॥
781. **ओ३म्** इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम् ॥
782. **ओ३म्** इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब। आगत्या वृषभिः सुतम् ॥
783. **ओ३म्** इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ॥
784. **ओ३म्** इमा उ त्वा पुरुवसोऽभि प्र नोनवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः ॥
785. **ओ३म्** इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः । वत्सं गावो न धेनवः ॥
786. **ओ३म्** इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्सं न धेनवः ॥
787. **ओ३म्** इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे ॥
788. **ओ३म्** इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम् ॥
789. **ओ३म्** इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोडाशम् ॥
790. **ओ३म्** इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव । उत प्र वर्धया मतिम् ॥
791. **ओ३म्** इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः ॥
792. **ओ३म्** इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः ॥
793. **ओ३म्** इमे त इन्द्र सोमाआः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥
794. **ओ३म्** इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि । ताँ इन्द्र सहसे पिब ॥
795. **ओ३म्** इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा ॥

796. **ओ३म्** इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब॥

797. **ओ३म्** इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे । सरो गौरो यथा पिब ॥

798. **ओ३म्** इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब ॥

799. **ओ३म्** इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् ॥

800. **ओ३म्** इहेव श्रृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते॥

801. **ओ३म्** ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। भेजानासः सुवीर्यम् ॥

802. **ओ३म्** ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम्॥

803. **ओ३म्** उ त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥

804. **ओ३म्** उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥

805. **ओ३म्** उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥

806. **ओ३म्** उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् ॥

807. **ओ३म्** उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत् । यद्वीळयासि वीळु तत् ॥

808. **ओ३म्** उत त्वाबधिरं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये । दूरादिह हवामहे ॥

809. **ओ३म्** उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् ॥

810. **ओ३म्** उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः । अधि पञ्च प्रधीँरिव ॥

811. **ओ३म्** उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन्भूरि ते वसु ॥

812. **ओ३म्** उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥

813. **ओ३म्** उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥

814. **ओ३म्** उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ॥

815. **ओ३म्** उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत । दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥

816. **ओ३म्** उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत। दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥

817. **ओ३म्** उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य सम्पिणक् ॥

818. **ओ३म्** उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते । पुरू चिन्मंहसे वसु ॥

819. **ओ३म्** उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम् ॥

820. **ओ३म्** उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम्॥

821. **ओ३म्** उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥

822. **ओ३म्** उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥

823. **ओ३म्** उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥

824. **ओ३म्** उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥

825. **ओ३म्** उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥

826. **ओ३म्** उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥
827. **ओ३म्** उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥
828. **ओ३म्** उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥
829. **ओ३म्** उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥
830. **ओ३म्** उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥
831. **ओ३म्** उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥
832. **ओ३म्** उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद्रेवतो मदः ॥
833. **ओ३म्** उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥
834. **ओ३म्** उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥
835. **ओ३म्** उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥
836. **ओ३म्** उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥
837. **ओ३म्** उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्। हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥
838. **ओ३म्** उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ॥
839. **ओ३म्** उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्॥
840. **ओ३म्** उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्॥
841. **ओ३म्** उपह्वरे गिरीणा२ सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥
842. **ओ३म्** ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै ॥
843. **ओ३म्** ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै ॥
844. **ओ३म्** ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे सहस्रा सूनृता शता । जरितृभ्यो विमंहते ॥
845. **ओ३म्** ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥
846. **ओ३म्** एकया प्रतिधापिबत्साकं सरांसि त्रिंशतम् । इन्द्रः सोमस्य काणुका ॥
847. **ओ३म्** एता च्यौत्नानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा । हृदा वीड्वधारयः ॥
848. **ओ३म्** एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौ२ ॥
849. **ओ३म्** एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर ॥
850. **ओ३म्** एन्द्र सानसि२ रयि२ सजित्वान२ सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥
851. **ओ३म्** एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् । पतयन्मन्दयत्सखम् ॥
852. **ओ३म्** एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥
853. **ओ३म्** एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥
854. **ओ३म्** एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥
855. **ओ३म्** एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥

856. **ओ३म्** ए॒वा हि ते॒ विभू॑तय ऊ॒तय॑ इन्द्र॒ माव॑ते । स॒द्यश्चि॒त्सन्ति॑ दा॒शुषे॑ ॥

857. **ओ३म्** ए॒वा हि ते॒ विभू॑तय ऊ॒तय॑ इन्द्र॒ माव॑ते। स॒द्यश्चि॒त्सन्ति॑ दा॒शुषे॑ ॥

858. **ओ३म्** ए॒वा हि ते॒ विभू॑तय ऊ॒तय॑ इन्द्र॒ माव॑ते। स॒द्यश्चि॒त्सन्ति॑ दा॒शुषे॑ ॥

859. **ओ३म्** ए॒वा ह्यसि॑ वीर॒युरे॒वा शूर॑ उ॒त स्थि॒रः। ए॒वा ते॒ राध्यं॒ मनः॑ ॥

860. **ओ३म्** एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥

861. **ओ३म्** ए॒वा ह्य॑स्य॒ काम्या॒ स्तोम॑ उ॒क्थं च॒ शंस्या॑। इन्द्रा॑य॒ सोम॑पीतये ॥

862. **ओ३म्** ए॒वा ह्य॑स्य॒ काम्या॒ स्तोम॑ उ॒क्थं च॒ शंस्या॑। इन्द्रा॑य॒ सोम॑पीतये ॥

863. **ओ३म्** ए॒वा ह्य॑स्य सू॒नृता॑ विर॒प्शी गोम॑ती म॒ही। प॒क्वा शाखा॒ न दा॒शुषे॑ ॥

864. **ओ३म्** ए॒वा ह्य॑स्य सू॒नृता॑ विर॒प्शी गोम॑ती म॒ही। प॒क्वा शाखा॒ न दा॒शुषे॑ ॥

865. **ओ३म्** एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्॥

866. **ओ३म्** एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्। इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम्॥

867. **ओ३म्** ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यत्स॒मव॑र्तयत् । इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रोद॑सी ॥

868. **ओ३म्** ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यत्स॒मव॑र्तयत्। इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रो॒द॑सी ॥

869. **ओ३म्** ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥

870. **ओ३म्** ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥

871. **ओ३म्** क ईमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्॥

872. **ओ३म्** कण्वा॒ इन्द्रं॒ यदक्र॑त॒ स्तोमै॑र्य॒ज्ञस्य॒ साध॑नम् । जा॒मि ब्रु॑वत॒ आयु॑धम् ॥

873. **ओ३म्** कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्। जामि ब्रुवत आयुधा॥

874. **ओ३म्** कण्वा॒ः इन्द्रं॒ य॒दक्र॑त॒ स्तोमै॑र्य॒ज्ञस्य॒ साध॑नम्। जा॒मि ब्रु॑वत॒ आयु॑धम् ॥

875. **ओ३म्** कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः। दीर्घं सुतम् वाताप्याय॥

876. **ओ३म्** कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिध्यस्य वर्धनम्॥

877. **ओ३म्** कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर ॥

878. **ओ३म्** कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑ । कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥

879. **ओ३म्** कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑। कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥

880. **ओ३म्** कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

881. **ओ३म्** कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

882. **ओ३म्** कया॑ नश्चि॒त्रऽ आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑।कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता॥४॥

883. **ओ३म्** कस्त्वा॑ स॒त्यो मदा॑नां॒ मंहि॑ष्ठो मत्स॒दन्ध॑सः। दृ॒ळ्हा चि॑दा॒रुजे॒ वसु॑ ॥

884. **ओ३म्** कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥

885. **ओ३म्** कस्य॒ वृषा॑ सु॒ते सचा॑ नि॒युत्वा॑न्वृष॒भो र॑णत् । वृ॒त्रहा सोम॑पीतये ॥

886. ओ३म् कस्य॑ स्वि॒त्सव॑नं॒ वृषा॑ जुजु॒ष्वाँ अव॑ गच्छति । इन्द्रं॒ क उ॑ स्वि॒दा च॑के ॥

887. ओ३म् किमा॒दु॒तासि॑ वृत्रह॒न्मघ॑वन्मन्यु॒मत्त॑मः । अत्राह॒ दानु॒माति॑रः ॥

888. ओ३म् कुवित्संस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शचीभिरप नो वरत् ॥

889. ओ३म् कु॒वित्स॑स्य॒ प्र हि व्र॒जं गोम॑न्तं दस्यु॒हा गम॑त् । शची॑भि॒रप॑ नो वरत् ॥

890. ओ३म् कु॒वित्स॑स्य॒ प्र हि व्र॒जं गोम॑न्तं दस्यु॒हा गम॑त् । शची॑भि॒रप॑ नो वरत् ॥

891. ओ३म् के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑ । समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥

892. ओ३म् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

893. ओ३म् के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑ । समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥

894. ओ३म् के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑ । समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥

895. ओ३म् के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑ । समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥

896. ओ३म् को नु म॑र्या॒ अमि॑थितः॒ सखा॒ सखा॑यमब्रवीत् । ज॒हा को अ॒स्मदी॑षते ॥

897. ओ३म् कऽ३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तꣳ सपर्यति ॥

898. ओ३म् गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया । वरिवस्या महोनाम् ॥

899. ओ३म् गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥

900. ओ३म् गि॒रा वज्रो॒ न संभृ॑तः॒ सब॑लो॒ अन॑पच्युतः । व॑व॒क्ष ऋ॒ष्वो अस्तृ॑तः ॥

901. ओ३म् गि॒रा वज्रो॒ न संभृ॑तः॒ सब॑लो॒ अन॑पच्युतः । व॑व॒क्ष ऋ॒ष्वो अस्तृ॑तः ॥

902. ओ३म् गि॒रा वज्रो॒ न सम्भृ॑तः सब॑लो॒ अन॑पच्युतः । व॒व॒क्ष ऋ॒ष्वो अस्तृ॑तः ॥

903. ओ३म् गिर्व॑णः पा॒हि नः॑ सु॒तं मधो॒र्धारा॑भिरज्यसे । इन्द्र॒ त्वादा॑त॒मिद्यशः॑ ॥

904. ओ३म् गिर्व॑णः पा॒हि नः॑ सु॒तं मधो॒र्धारा॑भिरज्यसे । इन्द्र॒ त्वादा॑त॒मिद्यशः॑ ॥

905. ओ३म् गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥

906. ओ३म् गुहा॑ स॒तीरु॒प त्मना॒ प्र यच्छोच॑न्त धी॒तयः॑ । कण्वा॑ ऋ॒तस्य॒ धार॑या ॥

907. ओ३म् ज॒ज्ञा॒नो नु श॒तक्र॑तु॒र्वि पृ॑च्छ॒दिति॑ मा॒तर॑म् । क उ॒ग्राः के ह॑ शृण्विरे ॥

908. ओ३म् तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः । इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ॥

909. ओ३म् तं त्वा॑ म॒रुत्व॑ती॒ परि॒ भुव॒द्वाणी॑ स॒याव॑री । नक्ष॑माणा स॒ह द्युभिः॑ ॥

910. ओ३म् तं त्वा॒ वाजे॑षु वा॒जिनं॑ वा॒जया॑मः शतक्रतो । धना॑नामिन्द्र सा॒तये॑ ॥

911. ओ३म् तं त्वा॒ वाजे॑षु वा॒जिनं॑ वा॒जया॑मः शतक्रतो । धना॑नामिन्द्र सा॒तये॑ ॥

912. ओ३म् तं त्वा॑ ह॒विष्म॑ती॒र्विश॒ उप॑ ब्रुवत ऊ॒तये॑ । उ॒रु॒ज्रय॑स॒मिन्दु॑भिः ॥

913. ओ३म् तं सु॑ष्टु॒त्या वि॑वासे ज्येष्ठ॒राजं॒ भरे॑ कृ॒त्नुम् । म॒हो वा॒जिनं॑ स॒निभ्यः॑ ॥

914. ओ३म् तथा॒ तद॑स्तु सोमपाः॒ सखे॑ वज्रि॒न्तथा॑ कृणु । यथा॑ त उ॒श्मसी॒ष्टये॑ ॥

915. ओ३म् तद्दधा॑ना अव॒स्यवो॑ यु॒ष्माभि॒र्दक्ष॑पितरः । स्याम॑ म॒रुत्व॑तो वृधे ॥

916. **ओ३म्** तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद्गवे न शाकिने ॥
917. **ओ३म्** तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने ॥
918. **ओ३म्** तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥
919. **ओ३म्** तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥
920. **ओ३म्** तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये । एहीमिन्द्र द्रवा पिब ॥
921. **ओ३म्** तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ॥
922. **ओ३म्** तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिष्ठां ग्रावभिः सुतम्। कुविन्न्वस्य तृष्णवः ॥
923. **ओ३म्** तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥
924. **ओ३म्** तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥
925. **ओ३म्** तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥
926. **ओ३म्** तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥
927. **ओ३म्** तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्। कृष्णा कृणोति जिह्वया॥
928. **ओ३म्** तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शꣳसिषम्॥
929. **ओ३म्** तां नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः। ऐन्द्रमग्निं च वोढवे ॥
930. **ओ३म्** तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा दधृग्यथोचिषे ॥
931. **ओ३म्** तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥
932. **ओ३म्** तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥
933. **ओ३म्** तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह ॥
934. **ओ३म्** तुभ्यायमद्रिभिः सुतो गोभिः श्रीतो मदाय कम् । प्र सोम इन्द्र हूयते ॥
935. **ओ३म्** तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते सुताः सोमासो अद्रिवः । हृदा हूयन्त उक्थिनः ॥
936. **ओ३म्** तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३सोमं चोदामि पीतये। एष रारन्तु ते हृदि ॥
937. **ओ३म्** तुभ्यꣳ सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय॥
938. **ओ३म्** तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित्पतिर्न ओहसे ॥
939. **ओ३म्** तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥
940. **ओ३म्** तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो सदे। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥
941. **ओ३म्** तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते । आ पप्राथ महित्वना ॥
942. **ओ३म्** तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना ॥
943. **ओ३म्** तेनं स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे । सद्यो जात ऋभुष्ठिर ॥
944. **ओ३म्** त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये॥
945. **ओ३म्** त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये॥

946. **ओ३म्** त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत । तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥
947. **ओ३म्** त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥
948. **ओ३म्** त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥
949. **ओ३म्** त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वꣳहिरण्ययुर्वसो ॥(गौ) ॥
950. **ओ३म्** त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनाषहम् ॥
951. **ओ३म्** त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्। त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥
952. **ओ३म्** त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥
953. **ओ३म्** त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः। स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ॥
954. **ओ३म्** त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन्वृषेदसि ॥
955. **ओ३म्** त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वꣳसन्वृषन्वृषेदसि ॥
956. **ओ३म्** त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः। वज्रं शिशान ओजसा ॥
957. **ओ३म्** त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा। स विश्वा भुव आभवः ॥
958. **ओ३म्** त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्य१ न्तरिक्षमतिरः। उद्द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥
959. **ओ३म्** त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम् ॥
960. **ओ३म्** त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम् ॥
961. **ओ३म्** त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत्पयः ॥
962. **ओ३म्** त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः । त्वमस्माकं तव स्मसि ॥
963. **ओ३म्** त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः ॥
964. **ओ३म्** त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो। त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥
965. **ओ३म्** त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥
966. **ओ३म्** त्वꣳ हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम् ॥
967. **ओ३म्** दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्। तव द्युक्षास इन्दवः ॥
968. **ओ३म्** दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि। यजमानाय सुन्वते ॥
969. **ओ३म्** देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसु गिरः। महामनूषत श्रुतम् ॥
970. **ओ३म्** देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥
971. **ओ३म्** दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवꣳ सवितारम् ॥
972. **ओ३म्** द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥
973. **ओ३म्** द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम् ॥
974. **ओ३म्** द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम् ॥
975. **ओ३म्** धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् । इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥

976. **ओ३म्** धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥

977. **ओ३म्** धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥२९॥

978. **ओ३म्** धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥

979. **ओ३म्** धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥

980. **ओ३म्** धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥

981. **ओ३म्** न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। न क्येवं यथा त्वम् ॥

982. **ओ३म्** न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥

983. **ओ३म्** न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः । यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥

984. **ओ३म्** न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥

985. **ओ३म्** न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुपश्रवद्गिरः ॥

986. **ओ३म्** न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमं चिकेत ॥

987. **ओ३म्** न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमैश्चिकेत ॥

988. **ओ३म्** न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः। यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥

989. **ओ३म्** न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ॥

990. **ओ३म्** न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः ॥

991. **ओ३म्** न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे ॥

992. **ओ३म्** न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्। भीमं न गां वारयन्ते ॥

993. **ओ३म्** नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्र्वः। यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे
॥

994. **ओ३म्** नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत । नान्यस्त्वच्छूर वाघतः ॥

995. **ओ३म्** नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे । विश्वं श्रृणोति पश्यति ॥

996. **ओ३म्** नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥

997. **ओ३म्** नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥

998. **ओ३म्** नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान्वीर आनयत् ॥

999. **ओ३म्** नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्नानि करिष्यतः ॥

1000. **ओ३म्** नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥

1001. **ओ३म्** नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै। त्वोतासो न्यर्वता ॥

1002. **ओ३म्** निरविध्यद्गिरिभ्य आ धारयत्पक्वमोदनम् । इन्द्रो बुन्दं स्वाततम् ॥

1003. **ओ३म्** नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति। शृङ्गेभिर्दशभिर्दिशन् ॥

1004. **ओ३म्** नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः। अश्वो न निक्तो नदीषु ॥

1005. **ओ३म्** पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिर्निचुम्पुणः ॥

1006. **ओ३म्** पदा पणींरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥

1007. **ओ३म्** पदा पणींरराधसो नि बाधस्व महाँ असि। नहि त्वा कश्चन प्रति ॥

1008. **ओ३म्** पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महा॑ऽ असि। न हि त्वा कश्च न प्रति॥

1009. **ओ३म्** पन्य इदुप गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् ॥

1010. **ओ३म्** पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय॥

1011. **ओ३म्** पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय॥

1012. **ओ३म्** परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥

1013. **ओ३म्** परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् । यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥

1014. **ओ३म्** परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥

1015. **ओ३म्** पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्। नि यमते शतमूतिः ॥

1016. **ओ३म्** पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु॥

1017. **ओ३म्** पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु । वज्रं शिशान ओजसा ॥

1018. **ओ३म्** पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥

1019. **ओ३म्** पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥

1020. **ओ३म्** पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्याऽ३ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन॥

1021. **ओ३म्** पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥

1022. **ओ३म्** पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्र॑ सोमे सचा सुते॥

1023. **ओ३म्** पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ॥

1024. **ओ३म्** पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् ॥

1025. **ओ३म्** पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन् ॥

1026. **ओ३म्** प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ॥

1027. **ओ३म्** प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः। प्र बाहू शूर राधसा ॥

1028. **ओ३म्** प्र ते बभ्रू विचक्षण शंसामि गोषणो नपात् । माभ्यां गा अनु शिश्रथः ॥

1029. **ओ३म्** प्र ते वोचाम वीर्या३३ या मन्दसान आरुजः । पुरो दासीरभीत्य ॥

1030. **ओ३म्** प्र व इन्द्राय मादन॑ हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥

1031. **ओ३म्** प्र व इन्द्राय मादन॑ हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥

1032. **ओ३म्** प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥

1033. **ओ३म्** प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥

1034. **ओ३म्** प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्र॑ स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं म॑हिष्ठम्॥

1035. **ओ३म्** प्र स्तोषदुप गासिषच्छ्रवत्साम गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत् ॥

1036. **ओ३म्** प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥

1037. **ओ३म्** प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥

1038. **ओ३म्** प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥

1039. **ओ३म्** प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥

1040. **ओ३म्** प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥

1041. **ओ३म्** प्रति त्वा शवसी वदद्गिरावप्सो न योधिषत् । यस्ते शत्रुत्वमाचके ॥

1042. **ओ३म्** प्रति श्रुताय वो धृषत्तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ॥

1043. **ओ३म्** प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् । अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥

1044. **ओ३म्** बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे ॥

1045. **ओ३म्** बृबदुक्थꣳहवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधः कृण्वन्तमवसे ॥

1046. **ओ३म्** बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

1047. **ओ३म्** बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम् ॥

1048. **ओ३म्** ब्रह्माणस्त्वा युजा वयꣳ सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

1049. **ओ३म्** ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

1050. **ओ३म्** ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

1051. **ओ३म्** ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

1052. **ओ३म्** ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥

1053. **ओ३म्** ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु । तवेद्धि सख्यमस्तृतम् ॥

1054. **ओ३म्** ब्राह्मणादिन्द्रे राधसः पिबा सोममृतूꣳ रनु । तवेदꣳसख्यमस्तृतम् ॥

1055. **ओ३म्** भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जꣳ शतक्रतो । यदिन्द्र मृडयासि नः ॥

1056. **ओ३म्** भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1057. **ओ३म्** भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1058. **ओ३म्** भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1059. **ओ३म्** भिन्धि विश्वा अप द्विषः बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1060. **ओ३म्** मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥

1061. **ओ३म्** मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥

1062. **ओ३म्** मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु सवनेष्वा ॥

1063. **ओ३म्** मरुत्वन्तमृजीषिणमोजस्वन्तं विरप्शिनम् । इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ॥

1064. ओ३म् महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः ॥

1065. ओ३म् महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥

1066. ओ३म् महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥

1067. ओ३म् महाँ२ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥

1068. ओ३म् महाँ२ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे॥

1069. ओ३म् महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥

1070. ओ३म् महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । नास्य क्षीयन्त ऊतयः ॥

1071. ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥

1072. ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः॥

1073. ओ३म् मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥

1074. ओ३म् मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः। शिक्षा शचीवः शचीभिः ॥

1075. ओ३म् मा न इन्द्राभ्या३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत् । त्वा युजा वनेम तत्॥

1076. ओ३म् मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे। त्वे अपि क्रतुर्मम ॥

1077. ओ३म् मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् ॥

1078. ओ३म् मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् ॥

1079. ओ३म् मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो । आवृत्वद्भूतु ते मनः ॥

1080. ओ३म् मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः ॥

1081. ओ३म् मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः। अव दस्यूँरधूनुथाः ॥

1082. ओ३म् मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ्याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥

1083. ओ३म् मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥

1084. ओ३म् य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा ॥

1085. ओ३म् य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥

1086. ओ३म् य इन्द्र आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः॥

1087. ओ३म् य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे॥

1088. ओ३म् य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः ॥

1089. ओ३म् य उग्रः फलिगं भिनन्न्य१क्सिन्धूँरवासृजत् । यो गोषु पक्वं धारयत् ॥

1090. ओ३म् य एक इद्विदयते वसु मर्त्ताय दाशुषे। ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग॥

1091. ओ३म् य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥

1092. ओ३म् यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ॥

1093. ओ३म् यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः ॥

1094. **ओ३म्** यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरूवसुः ॥

1095. **ओ३म्** यः सृबिन्दमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः ॥

1096. **ओ३म्** यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि । गोदा इदिन्द्र बोधि नः ॥

1097. **ओ३म्** यच्छक्रा वाचमारुहन्नन्तरिक्षं सिषासथः । सं देवा अमदन्वृषा ॥

1098. **ओ३म्** यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत । भवेरापिर्नो अन्तमः ॥

1099. **ओ३म्** यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥

1100. **ओ३म्** यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥

1101. **ओ३म्** यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥

1102. **ओ३म्** यदङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः । महाँ अपार ओजसा ॥

1103. **ओ३म्** यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

1104. **ओ३म्** यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

1105. **ओ३म्** यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत आ गहि ॥

1106. **ओ३म्** यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत आ गहि ॥

1107. **ओ३म्** यदस्य मन्युरध्वनीद्वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् ॥

1108. **ओ३म्** यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ॥

1109. **ओ३म्** यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥

1110. **ओ३म्** यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥

1111. **ओ३म्** यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥

1112. **ओ३म्** यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभुवत्सचा ॥

1113. **ओ३म्** यद्दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि । मा तत्करिन्द्र मृळय ॥

1114. **ओ३म्** यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत्सत्यमित्तव ॥

1115. **ओ३म्** यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत्सत्यमित्तव ॥

1116. **ओ३म्** यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1117. **ओ३म्** यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1118. **ओ३म्** यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1119. **ओ३म्** यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1120. **ओ३म्** यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्नथः ॥

1121. **ओ३म्** यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नि यच्छ तन्वम् । स त्वा ममत्तु सोम्य ॥

1122. **ओ३म्** यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः । य ओजोदातमो मदः ॥

1123. **ओ३म्** यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदेः ॥

1124. **ओ३म्** यस्ते नूनं२ शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदे ॥

1125. **ओ३म्** यस्ते रेवाँ अदाशुरिः प्रममर्षं मघत्तये । तस्यं नो वेद आ भंर ॥

1126. **ओ३म्** यस्ते शृङ्गवृषो णपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः । न्यस्मिं दध्र आ मनः ॥

1127. **ओ३म्** यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन्दध्र आ मनः ॥

1128. **ओ३म्** यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या । अपामवो न समुद्रे ॥

1129. **ओ३म्** यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः । इन्द्रं सुते हवामहे ॥

1130. **ओ३म्** यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः । इन्द्रं सुते हवामहे ॥

1131. **ओ३म्** यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त सं२सदः । इन्द्रं२ सुते हवामहे ॥

1132. **ओ३म्** यस्यं ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥

1133. **ओ३म्** यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं२ हिरण्ययम् ॥

1134. **ओ३म्** यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसु स्पार्हं तदा भर ॥

1135. **ओ३म्** यस्यं ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसुं स्पार्हं तदा भंर ॥

1136. **ओ३म्** यस्यं ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसुं स्पार्हं तदा भंर ॥

1137. **ओ३म्** यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनि नि द्विता । वीरस्यं पृतनाषहः ॥

1138. **ओ३म्** यस्यं संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय गायत ॥

1139. **ओ३म्** यस्यं संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय गायत ॥

1140. **ओ३म्** यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥

1141. **ओ३म्** यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं२ स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥

1142. **ओ३म्** या तं ऊतिरमित्रहन्मक्षूजवस्तमासति । तया नो हिनुही रथम् ॥

1143. **ओ३म्** या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे । ता संसत्सु प्र वोचत ॥

1144. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥

1145. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥

1146. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥

1147. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥

1148. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥

1149. **ओ३म्** युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥

1150. **ओ३म्** युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥

1151. **ओ३म्** युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥

1152. **ओ३म्** युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥

1153. **ओ३म्** युध्मं२सन्तमनर्वाणं२सोमपामनपच्युतम् । नरमवार्यक्रतुम् ॥

1154. **ओ३म्** ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः । उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥

1155. **ओ३म्** ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुरृषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥

1156. **ओ३म्** ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुरृषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥

1157. **ओ३म्** ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुरृषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥

1158. **ओ३म्** ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वाँस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥

1159. **ओ३म्** ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वांस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥

1160. **ओ३म्** यो अप्सु चन्द्रमा इव सोमश्चमूषु ददृशे । पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥

1161. **ओ३म्** यो रायो३ऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा । तस्मा इन्द्राय गायत ॥

1162. **ओ३म्** योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

1163. **ओ३म्** योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

1164. **ओ३म्** योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

1165. **ओ३म्** योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

1166. **ओ३म्** यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । न किः स दभ्यते जनः ॥

1167. **ओ३म्** रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥

1168. **ओ३म्** रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

1169. **ओ३म्** रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

1170. **ओ३म्** रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

1171. **ओ३म्** रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

1172. **ओ३म्** रेवाँइद्रेवतः स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः । प्रेदु हरिवः सुतस्य ॥

1173. **ओ३म्** वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥

1174. **ओ३म्** वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः ॥

1175. **ओ३म्** वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः ॥

1176. **ओ३म्** वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो ॥

1177. **ओ३म्** वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विद्धि त्व१स्य नो वसो ॥

1178. **ओ३म्** वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन् । विद्धी त्वा३ऽऽऽ स्य नो वसो ॥

1179. **ओ३म्** वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥

1180. **ओ३म्** वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥

1181. **ओ३म्** वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥

1182. **ओ३म्** वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ॥

1183. **ओ३म्** वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतये ॥

1184. **ओ३म्** वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्तं ऋग्मियम्। होम गन्तारमूतये ॥

1185. **ओ३म्** वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् । इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥

1186. **ओ३म्** वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम्। इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥

1187. **ओ३म्** वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम्। इन्द्रात्परितन्वं ममे ॥

1188. **ओ३म्** वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥

1189. **ओ३म्** वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥

1190. **ओ३म्** वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत् ॥

1191. **ओ३म्** वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥

1192. **ओ३म्** वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥

1193. **ओ३म्** वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥

1194. **ओ३म्** वि चिद्वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना। वज्रेण शतपर्वणा ॥

1195. **ओ३म्** वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ॥

1196. **ओ३म्** वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा। शिरो बिभेद वृष्णिना ॥

1197. **ओ३म्** वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य ताँ अमः ॥

1198. **ओ३म्** वि षु विश्वा अभियुजो वज्रिन्विष्वग्यथा वृह । भवा नः सुश्रवस्तमः ॥

1199. **ओ३म्** विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्। तुविमात्रमवोभिः ॥

1200. **ओ३म्** विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे । अधा ते सुम्नमीमहे ॥

1201. **ओ३म्** विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे। अधा ते सुम्नमीमहे ॥

1202. **ओ३म्** विद्मा हि त्वा धनंजयमिन्द्र दृळ्हा चिदारुजम् । आदारिणं यथा गयम् ॥

1203. **ओ३म्** विद्मा हि यस्ते अद्रिवस्त्वादत्तः सत्य सोमपाः । विश्वासु दस्म कृष्टिषु ॥

1204. **ओ३म्** विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे । य इन्द्र जठरेषु ते ॥

1205. **ओ३म्** विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते ॥

1206. **ओ३म्** विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ॥

1207. **ओ३म्** वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्रिया अनु ॥

1208. **ओ३म्** वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्रिया अनु ॥

1209. **ओ३म्** वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥

1210. **ओ३म्** वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥

1211. **ओ३म्** व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥

1212. **ओ३म्** व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥

1213. **ओ३म्** व्यऽन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥

1214. **ओ३म्** शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकृमा सत्यराधसे ॥

1215. **ओ३म्** शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि। मंहिष्ठ आ मदर्दिवि ॥

1216. **ओ३म्** शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन्वि राजति। विमदन्बर्हिरासरन् ॥

1217. **ओ३म्** शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत् । यमिन्द्र चकृषे युजम् ॥

1218. **ओ३म्** शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥

1219. **ओ३म्** शाचिगो शाचिपूजनायं३ रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥

1220. **ओ३म्** शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ३ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने ॥

1221. **ओ३म्** शिक्षेयमस्मै दित्सेयं३ शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम् ॥

1222. **ओ३म्** शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम् ॥

1223. **ओ३म्** शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

1224. **ओ३म्** शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

1225. **ओ३म्** शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥

1226. **ओ३म्** श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे ॥

1227. **ओ३म्** शं३सेदुक्थं३ सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे ॥

1228. **ओ३म्** स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम्। गमद्वाजेभिरा स नः ॥

1229. **ओ३म्** स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्या। गमद्वाजेभिरा स नः ॥

1230. **ओ३म्** स घेदुतासि वृत्रहन्त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे ॥

1231. **ओ३म्** स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च । अच्छा च नः सुम्नं नेषि ॥

1232. **ओ३म्** स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च। अछा च नः सुम्नं नेषि ॥

1233. **ओ३म्** स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥

1234. **ओ३म्** स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥

1235. **ओ३म्** स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥

1236. **ओ३म्** स नः शक्रश्चिदा शकद्दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥

1237. **ओ३म्** स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥

1238. **ओ३म्** स नो ददातु तां रयिमुरुं पिशङ्गसंदृशम्। इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ॥

1239. **ओ३म्** स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः । गोमद्भिर्गोपते धृषत् ॥

1240. **ओ३म्** स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥

1241. **ओ३म्** स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥

1242. **ओ३म्** स नो वृषन्नमुं चरुं३ सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥

1243. **ओ३म्** स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः ॥

1244. **ओ३म्** स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते । गिर्वणस्तमो अध्रिगुः ॥

1245. **ओ३म्** सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥

1246. **ओ३म्** सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्। असदित्ते विभु प्रभु ॥

1247. **ओ३म्** सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक् । अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥

1248. **ओ३म्** सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्। अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥

1249. **ओ३म्** सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः ॥

1250. **ओ३म्** सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्... ॥

1251. **ओ३म्** सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः ॥

1252. **ओ३म्** सप्ती चिद्धा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद्धूर्वृष्ण उत्तरा ॥

1253. **ओ३म्** समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥

1254. **ओ३म्** समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥

1255. **ओ३म्** समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥

1256. **ओ३म्** समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥

1257. **ओ३म्** समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँ इव खेदया । प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥

1258. **ओ३म्** समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रासो वा धियायवः ॥

1259. **ओ३म्** समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ। विप्रासो वा धियायवः ॥

1260. **ओ३म्** सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि। ताविमा उप सर्पतः ॥

1261. **ओ३म्** सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि । असमत्रा राध एतु ते ॥

1262. **ओ३म्** सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये। सोमासो दध्याशिरः ॥

1263. **ओ३म्** सुतेसुते न्योकसे बृहद्बृहत एदरिः। इन्द्राय शूषमर्चति ॥

1264. **ओ३म्** सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः ॥

1265. **ओ३म्** सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

1266. **ओ३म्** सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

1267. **ओ३म्** सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

1268. **ओ३म्** सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

1269. **ओ३म्** सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

1270. **ओ३म्** सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासा८ सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता ॥

1271. **ओ३म्** सोमाना८ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः ॥

1272. **ओ३म्** स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता ॥

1273. **ओ३म्** स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने । नकिर्यं वृण्वते युधि ॥

1274. **ओ३म्** स्तोत्रं२ राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता॥

1275. **ओ३म्** स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तन्वे३तव। सोमः शमस्तु ते हृदे ॥

15. इन्द्रउषाश्च

1276. **ओ३म्** अपोषा अनसः सरत्सम्पिष्टादह बिभ्युषी । नि यत्सीं शिश्नथद्वृषा ॥

16. इन्द्रवायू

1277. **ओ३म्** आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ॥

1278. **ओ३म्** इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोषसा । पिबतं दाशुषो गृहे ॥

1279. **ओ३म्** इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् । इन्दवो वामुशन्ति हि ॥

1280. **ओ३म्** इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्।आदित्यान् मारुतं गणम्॥

1281. **ओ३म्** इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये । सहस्राक्षा धियस्पती ॥

1282. **ओ३म्** इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि॥

1283. **ओ३म्** इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ॥

1284. **ओ३म्** गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥

1285. **ओ३म्** रथेन पृथुपाजसा दाश्वांसमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ॥

1286. **ओ३म्** वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू । तावा यातमुप द्रवत् ॥

1287. **ओ३म्** शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् ॥

1288. **ओ३म्** शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ॥

17. इन्द्राग्नी

1289. **ओ३म्** अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति। उभा हि वृत्रहन्तमा ॥

1290. **ओ३म्** आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥

1291. **ओ३म्** इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥

1292. **ओ३म्** इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम्॥

1293. **ओ३म्** इन्द्राग्नी अपसस्परि उप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या अनु॥

1294. **ओ३म्** इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या अनु॥

1295. **ओ३म्** इन्द्राग्नी आ गतं२ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता॥

1296. **ओ३म्** इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम् ॥

1297. **ओ३म्** इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं२ सुतम्॥

1298. **ओ३म्** इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयासि च। युवोरप्तूर्यं हितम् ॥

1299. **ओ३म्** इन्द्राग्नी तविषाणि वा२सधस्थानि प्रया२सि च। युवोरप्तूर्य२हितम् ॥

1300. **ओ३म्** इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ॥

1301. **ओ३म्** इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा॥

1302. **ओ३म्** इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा॥

1303. **ओ३म्** इन्द्राग्नी युवामिमेऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतꣳशम्भुवा सुतम्॥

1304. **ओ३म्** इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः। तद्वां चेति प्र वीर्यम्॥

1305. **ओ३म्** इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे। धिया धेना अवस्यवः॥

1306. **ओ३म्** इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥

1307. **ओ३म्** इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः। अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि॥

1308. **ओ३म्** इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित्स्तोममुश्मसि । ता सोमं सोमपातमा ॥

1309. **ओ३म्** उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा ।आङ्गूषैराविवासतः॥

1310. **ओ३म्** उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृडात ईदृशे॥

1311. **ओ३म्** उग्रा सन्ता हवामह उपेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ॥

1312. **ओ३म्** एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥

1313. **ओ३म्** जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥

1314. **ओ३म्** तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥

1315. **ओ३म्** ता नो वाजवतीरिष आशून्पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे ॥

1316. **ओ३म्** ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे । सोमपा सोमपीतये ॥

1317. **ओ३म्** ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे। मेधसाता सनिष्यवः ॥

1318. **ओ३म्** ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये। सबाधो वाजसातये॥

1319. **ओ३म्** ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः॥

1320. **ओ३म्** ताभिरा गच्छतं नरोपेदꣳसवनꣳसुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥

1321. **ओ३म्** तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥

1322. **ओ३म्** तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥

1323. **ओ३म्** तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा॥

1324. **ओ३म्** तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥

1325. **ओ३म्** तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥

1326. **ओ३म्** प्र वामर्चन्त्युक्थिनः नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे॥

1327. **ओ३म्** प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इषे आ वृणे॥

1328. **ओ३म्** मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये। मा नो रीरधतं निदे ॥

1329. **ओ३म्** यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥

1330. **ओ३म्** यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥

1331. **ओ३म्** या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥

1332. **ओ३म्** या वांऽसन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्॥

1333. **ओ३म्** श्रृणुतं जरितुउहवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः। ईशाना पिप्यतं धियः॥

1334. **ओ३म्** हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती। हथो विश्वा अप द्विषः ॥

18. इन्द्रापूषणौ

1335. **ओ३म्** तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ॥

1336. **ओ३म्** यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत्सचा ॥

19. इन्द्राबृहस्पती

1337. **ओ३म्** अयं वां परि षिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती । चारुर्मदाय पीतये ॥

1338. **ओ३म्** अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणम् ॥

1339. **ओ३म्** आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये ॥

1340. **ओ३म्** इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥

1341. **ओ३म्** सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे । मादयेथां तदोकसा ॥

20. इन्द्रावरुणौ

1342. **ओ३म्** अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ॥

1343. **ओ३म्** इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ॥

1344. **ओ३म्** इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे ॥

1345. **ओ३म्** प्र वामश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामृधाथे सधस्तुतिम् ॥

21. इन्द्राश्वौ

1346. **ओ३म्** कनीनकेव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते ॥

22. इन्द्रोमरुत्वान्

1347. **ओ३म्** इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ॥

1348. **ओ३म्** मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये । सजूर्गणेन तृम्पतु ॥

1349. **ओ३म्** हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो दुःशंस ईशत ॥

23. इळः

1350. **ओ३म्** अग्ने सुखतमे रथे देवाँऽ ईडित आ वह। असि होता मनुर्हितः ॥

1351. **ओ३म्** अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः ॥

24. ईज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च

1352. **ओ३म्** तस्य द्युमाँ असद्रथो देवजूतः स शूशुवत् । विश्वा वन्वन्नमित्रिया ॥

1353. **ओ३म्** यो यजाति यजात इत्सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत् ॥

25. उलूखलः

1354. **ओ३म्** आ॒यु॒जी वा॑ज॒सात॑मा ता ह्यु१॒च्चा वि॑जर्भृ॒तः । हरी॑ इ॒वान्धां॑सि॒ बप्स॑ता ॥

1355. **ओ३म्** उच्छि॒ष्टं च॒म्वो॑र्भर॒ सोमं॑ प॒वित्र॒ आ सृ॑ज । नि धे॑हि॒ गोरधि॑ त्व॒चि ॥

1356. **ओ३म्** ता नो॑ अ॒द्य व॑नस्पती ऋ॒ष्वावृ॒ष्वेभिः॑ सो॒तृभिः॑ । इन्द्रा॑य॒ मधु॑मत्सुतम् ॥

26. उषाः

1357. **ओ३म्** प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदर्शि दुहिता ॥

1358. **ओ३म्** अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखा भूदश्विनोरुषाः ॥

1359. **ओ३म्** उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ॥

1360. **ओ३म्** प्रति॑ भ॒द्रा अ॑दृक्षत॒ गवां॒ सर्गा॒ न र॒श्मयः॑ । ओषा अ॑प्रा उ॒रु ज्रयः॑ ॥

1361. **ओ३म्** आ द्यां त॑नोषि र॒श्मिभि॒रान्तरि॑क्षमु॒रु प्रि॒यम् । उषः॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ ॥

27. ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिः

1362. **ओ३म्** ऋ॒ज्राविन्द्रो॒त आ द॑दे॒ हरी॒ ऋक्ष॑स्य सू॒नवि॑ । आ॒श्व॒मे॒धस्य॒ रोहि॑ता ॥

28. ऋभवः

1363. **ओ३म्** अ॒यं दे॒वाय॒ जन्म॑ने॒ स्तोमो॒ विप्रे॑भिरा॒सया । अका॑रि रत्न॒धात॑मः ॥

1364. **ओ३म्** उ॒त त्यं च॑म॒सं नवं॒ त्वष्टु॑र्दे॒वस्य॒ निष्कृ॑तम् । अक॑र्त च॒तुरः॒ पुनः॑ ॥

1365. **ओ३म्** ते नो॒ रत्ना॑नि धत्तन॒ त्रिरा साप्ता॑नि सुन्व॒ते । एक॑मेकं सुश॒स्तिभिः॑ ॥

1366. **ओ३म्** य इन्द्रा॑य वचो॒युजा॑ तत॒क्षुर्मन॑सा॒ हरी॑ । शमी॑भिर्य॒ज्ञमा॑शत ॥

29. ओषधयः

1367. **ओ३म्** क॒र॒म्भ ओ॑षधे भव॒ पीवो॑ वृ॒क्क उ॑दार॒थिः । वाता॑पे॒ पीव॒ इद्भ॑व ॥

1368. **ओ३म्** यत्ते॑ सोम॒ गवा॑शिरो॒ यवा॑शिरो॒ भजा॑महे । वाता॑पे॒ पीव॒ इद्भ॑व ॥

30. कुष्ठस्तक्मनाशनः

1369. **ओ३म्** इ॒मं मे॑ कुष्ठ॒ पूरु॑षं॒ तमा व॑ह॒ तं निष्कु॑रु । तमु॑ मे अग॒दं कृ॑धि ॥

31. कृषीवलाः कवयो वा देवताः

1370. **ओ३म्** सीरा॑ युञ्जन्ति क॒वयो॑ यु॒गा वि त॑न्वते॒ पृथ॑क् । धीरा॑ दे॒वेषु॑ सुम्न॒या ॥

32. क्षत्रपतिर्देवता

1371. **ओ३म्** योगे॑योगे त॒वस्त॑रं॒ वाजे॑वाजे हवामहे । सखा॑य॒ऽइन्द्र॑मू॒तये॑ ॥

33. गौः

1372. **ओ३म्** आयं गौः पृश्नि॑रक्रमी॒दस॑दन्मा॒तरं॑ पुरः । पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्स्वः॑ ॥

1373. **ओ३म्** अ॒न्तश्च॑रति रोच॒ना अ॒स्य प्रा॒णाद॑पान॒तः । व्य॑ख्यन्महि॒षः स्वः॑ ॥

1374. **ओ३म्** त्रिं॒शद्धाम॒ वि रा॑जति॒ वाक्प॑त॒ङ्गो अ॑शिश्रिय॒त् । प्रति॒ वस्तो॒रह॒र्द्युभिः॑ ॥

34. गौः, सूर्यः

1375. **ओ३म्** अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः स्वः ॥
1376. **ओ३म्** अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवः ॥
1377. **ओ३म्** आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥
1378. **ओ३म्** ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चतीर्वर्चसा प्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा ॥
1379. **ओ३म्** त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत् । प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ॥
1380. **ओ३म्** वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्घृतं पयः ॥

35. ग्रावाणः

1381. **ओ३म्** ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा । यजमानाय सुन्वते ॥
1382. **ओ३म्** ग्रावाणो अप दुच्छुनामप सेधत दुर्मतिम् । उस्राः कर्तन भेषजम् ॥
1383. **ओ३म्** प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत ॥

36. तनूनपातः

1384. **ओ३म्** मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुह्यूतये ॥
1385. **ओ३म्** मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये ॥

37. तरन्तो वैददश्विः

1386. **ओ३म्** येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा । दिवि रुक्म इवोपरि ॥

38. त्वष्टा

1387. **ओ३म्** अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना । त्वं हि रत्नधा असि ॥
1388. **ओ३म्** इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः ॥

39. दम्पती

1389. **ओ३म्** न देवानामपि ह्नुतः सुमतिं न जुगुक्षतः । श्रवो बृहद्विवासतः ॥
1390. **ओ३म्** या दम्पती समनसा सुनुत आ च धावतः । देवासो नित्ययाशिरा ॥

40. दम्पत्योराशिषः

1391. **ओ३म्** अरमतिरनर्वणो विश्वो देवस्य मनसा । आदित्यानामनेह इत् ॥

41. देवा

1392. **ओ३म्** आरे३ ऽसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत् । आरे अश्मा यमस्यथ ॥
1393. **ओ३म्** अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्या अधि सानवि ॥

42. देवीर्द्वारः

1394. **ओ३म्** वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः । अद्या नूनं च यष्टवे ॥

43. देव्यः

1395. **ओ३म्** अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः । अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम् ॥

44. द्यावापृथिवी

1396. **ओ३म्** पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः । ऊह्याथे सनादृतम् ॥
1397. **ओ३म्** प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे । शुची उप प्रशस्तये ॥
1398. **ओ३म्** मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम् । परि यज्ञं ॥

45. द्यावापृथिव्यौ

1399. **ओ३म्** तयोरिद्घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः । गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे ॥
1400. **ओ३म्** मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥
1401. **ओ३म्** मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥
1402. **ओ३म्** मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम् । परि यज्ञं नि षेदथुः ॥

46. द्यावापृथिव्यौ हविर्धाने वा

1403. **ओ३म्** आ वामुपस्थमद्रुहा देवाः सीदन्तु यज्ञियाः । इहाद्य सोमपीतये ॥
1404. **ओ३म्** द्यावा नः पृथिवी इमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् । यज्ञं देवेषु यच्छताम् ॥
1405. **ओ३म्** प्रेतां यज्ञस्य शम्भुवा युवामिदा वृणीमहे । अग्निं च हव्यवाहनम् ॥

47. द्रविणोदाः

1406. **ओ३म्** द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे । यज्ञेषु देवमीळते ॥
1407. **ओ३म्** द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे ॥
1408. **ओ३म्** द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥
1409. **ओ३म्** यत्त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अध स्मा नो ददिर्भव ॥

48. नराशंसः

1410. **ओ३म्** नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥
1411. **ओ३म्** नराशꣳसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वꣳ हविष्कृतम् ॥

49. परमेश्वरो देवता

1412. **ओ३म्** युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्तेरोचना दिवि ॥

50. पर्जन्यः

1413. **ओ३म्** पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे । स नो यवसमिच्छतु ॥

51. पवमानः

1414. **ओ३म्** पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतातये ॥

52. पवमानः सोमः

1415. **ओ३म्** अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः । सꣳ सूर्येण दिद्युते ॥

1416. ओ३म् अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः । सꣳ सूर्येण दिद्युते ॥

1417. ओ३म् अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये । अवावशन्त धीतयः ॥

1418. ओ३म् अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥

1419. ओ३म् अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजानꣳ सुक्रतो दिवः । सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥

1420. ओ३म् अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् । इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः ॥

1421. ओ३म् अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये । वि वारमव्यमाशवः ॥

1422. ओ३म् अत्यं पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि । इन्दुर्देवेषु पत्यते ॥

1423. ओ३म् अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥

1424. ओ३म् अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे । अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥

1425. ओ३म् अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे । अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥

1426. ओ३म् अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥

1427. ओ३म् अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः । अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥

1428. ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥

1429. ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमं पवित्र आ नय । पुनाहीन्द्राय पातवे ॥

1430. ओ३म् अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमं पवित्र आ नय । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥

1431. ओ३म् अनप्तमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥

1432. ओ३म् अनु द्रप्सास इन्दव आपो न प्रवतासरन् । पुनाना इन्द्रमाशत ॥

1433. ओ३म् अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम् ॥

1434. ओ३म् अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । रुचे जनन्त सूर्यम् ॥

1435. ओ३म् अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः । वृष्णो हरस आयवः ॥

1436. ओ३म् अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः । योनावृतस्य सीदत दू ॥

1437. ओ३म् अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

1438. ओ३म् अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

1439. ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥

1440. ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥

1441. ओ३म् अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥

1442. ओ३म् अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥

1443. ओ३म् अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम् । पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥

1444. ओ३म् अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि । सनद्वाजः परि स्रव ॥

1445. ओ३म् अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥

1446. **ओ३म्** अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥

1447. **ओ३म्** अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम् ॥

1448. **ओ३म्** अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः । देवं देवाय देवयु ॥

1449. **ओ३म्** अभि त्यं पूर्व्यं मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ । अभि वाजमुत श्रवः ॥

1450. **ओ३म्** अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत । मृज्यसे सोम सातये ॥

1451. **ओ३म्** अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥

1452. **ओ३म्** अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥

1453. **ओ३म्** अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् । सूरः पश्यति चक्षसा ॥

1454. **ओ३म्** अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः । सोमो हिन्वे परावति ॥

1455. **ओ३म्** अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् । सूरः पश्यति चक्षसा ॥

1456. **ओ३म्** अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति । विप्रस्य धारया कविः ॥

1457. **ओ३म्** अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥

1458. **ओ३म्** अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीरृतस्य मातरः । मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ॥

1459. **ओ३म्** अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीरृतस्य मातरः । मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम् ॥

1460. **ओ३म्** अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः । इन्द्रꣳ सोमस्य पीतये ॥

1461. **ओ३म्** अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः । इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥

1462. **ओ३म्** अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्यज्ञस्य कारवः । दधानाश्चक्षसि प्रियम् ॥

1463. **ओ३म्** अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारु प्रियतमं हविः ॥

1464. **ओ३म्** अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवꣳ रयिम् । इषꣳ स्तोतृभ्य आ भर ॥

1465. **ओ३म्** अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसꣳ रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1466. **ओ३म्** अभ्यर्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1467. **ओ३म्** अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥

1468. **ओ३म्** अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे । देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥

1469. **ओ३म्** अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः ॥

1470. **ओ३म्** अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति । हिन्वान आप्यं बृहत् ॥

1471. **ओ३म्** अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि । सोमो देवो न सूर्यः ॥

1472. **ओ३म्** अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् ॥

1473. **ओ३म्** अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । युजं वाजेषु चोदय ॥

1474. **ओ३म्** अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया । युजं वाजेषु चोदय ॥

1475. **ओ३म्** अया निजघ्निरोजसा रथसंगे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥

1476. ओ३म् अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते । स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥

1477. ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥

1478. ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥

1479. ओ३म् अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥

1480. ओ३म् अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥

1481. ओ३म् अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥

1482. ओ३म् अया सोम सुकृत्यपा महाउ ।न्त्सन्नभ्यवर्धथाः । म न्दान इद्वृषायसे ॥

1483. ओ३म् अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत । मन्दान उद्वृषायते ॥

1484. ओ३म् अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥

1485. ओ३म् अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥

1486. ओ३म् अयꣳ स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ । सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥

1487. ओ३म् अयꣳ सूर्य इवोपदृगयꣳ सराꣳसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् ॥

1488. ओ३म् अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥

1489. ओ३म् अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् । वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥

1490. ओ३म् अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् । सीदन्योनौ व नेष्वा ॥

1491. ओ३म् अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् । सीदन्योनौ वनेष्वा ॥

1492. ओ३म् अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि । सूनोर्वत्सस्य मातरः ॥

1493. ओ३म् अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥

1494. ओ३म् अव्यो वारैः परि प्रियꣳ हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः । पवमानं मधुश्चुतम् ॥

1495. ओ३म् अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥

1496. ओ३म् अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि ॥

1497. ओ३म् अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि ॥

1498. ओ३म् असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः । कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत् ॥

1499. ओ३म् असाव्यꣳशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । श्येनो न योनिमासदत् ॥

1500. ओ३म् असाव्यꣳशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । श्येनो न योनिमासदत् ॥

1501. ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

1502. ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

1503. ओ३म् असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

1504. ओ३म् असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम् ॥

1505. ओ३म् असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजना ॥

1506. **ओ३म्** अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये । श्रवो वसूनि सं जितम् ॥
1507. **ओ३म्** अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥
1508. **ओ३म्** अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥
1509. **ओ३म्** अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये। श्रवो वसूनि सञ्जितम्॥
1510. **ओ३म्** अस्मे धेहि द्युमद्यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च । सनिं मेधामुत श्रवः ॥
1511. **ओ३म्** अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । पयः सहस्रसामृषिम् ॥
1512. **ओ३म्** अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥
1513. **ओ३म्** अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति॥
1514. **ओ३म्** आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते । उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥
1515. **ओ३म्** आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते । अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥
1516. **ओ३म्** आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥
1517. **ओ३म्** आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥
1518. **ओ३म्** आ दिवस्पृष्ठमश्वयुर्गव्ययुः सोम रोहसि । वीरयुः शवसस्पते ॥
1519. **ओ३म्** आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥
1520. **ओ३म्** आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम् ॥
1521. **ओ३म्** आ न इन्दो शातग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये ॥
1522. **ओ३म्** आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदासि नः ॥
1523. **ओ३म्** आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । सुष्वाणो देववीतये ॥
1524. **ओ३म्** आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम् । देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् ॥
1525. **ओ३म्** आ नः सोम संहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये॥
1526. **ओ३म्** आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् । अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥
1527. **ओ३म्** आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्॥
1528. **ओ३म्** आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम् । कृधि प्रजावतीरिषः ॥
1529. **ओ३म्** आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम् ॥
1530. **ओ३म्** आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ॥
1531. **ओ३म्** आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ॥
1532. **ओ३म्** आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्॥
1533. **ओ३म्** आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् । अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥
1534. **ओ३म्** आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्ववत्सोम वीरवत्॥
1535. **ओ३म्** आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् ॥

1536. **ओ३म्** आ प॑वस्व स॒हस्रिण॑ꣳ र॒यिꣳ सोम सु॒वीर्य॑म्। अ॒स्मे श्रवा॑ꣳसि धारय॥

1537. **ओ३म्** आ प॑वस्व सु॒वीर्यं॒ मन्द॑मानः स्वायुध। इ॒हो ष्वि॑न्द॒वा ग॑हि ॥

1538. **ओ३म्** आ प॑वस्व॒ हिर॑ण्यव॒दश्वा॑वत्सोम वी॒रव॑त् । वाज॒ं गोम॑न्त॒मा भ॑र ॥

1539. **ओ३म्** आ म॒न्द्रमा वरे॑ण्यमा॒ विप्र॑मा मनी॒षिण॑म्। पा॒न्तमा॑ पुरु॒स्पृह॑म्॥

1540. **ओ३म्** आ मि॒त्रावरु॑णा॒ा भग॒ं मध्व॑: पवन्त ऊ॒र्मय॑: । वि॒दा॒ना अ॑स्य॒ शक्म॑भिः ॥

1541. **ओ३म्** आ मि॒त्रे वरु॑णे भ॒गे मधोः॑ पवन्त ऊ॒र्मयः॑। वि॒दाना॑ अ॒स्य॒ शक्म॑भिः॥

1542. **ओ३म्** आ ययो॑स्त्रिं॒शत॒ं तना॑ स॒हस्रा॑णि च॒ दद्म॑हे । तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति ॥

1543. **ओ३म्** आ ययोस्त्रि॒ꣳशतं॒ त॒ना॑ स॒हस्रा॑णि च॒ द॒द्म॑हे। त॒रत्से॒ मन्दी॑ धा॑वति ॥

1544. **ओ३म्** आ योनि॑मरु॒णो॒ रु॑ह॒द्गम॒दिन्द्र॒ं वृषा॑ सु॒तः । ध्रु॒वे सद॑सि सीदति ॥

1545. **ओ३म्** आ योनि॑मरु॒णो रु॒ह॒द्ग॒मदि॑न्द्रो वृ॒षा सु॒त॑म्। ध्रु॒वे सद॑सि सीदतु॥

1546. **ओ३म्** आ र॒यिमा सु॑चे॒तुन॒मा सु॑क्रतो त॒नूष्वा। पा॒न्तमा॑ पु॒रु॒स्पृह॑म् ॥

1547. **ओ३म्** आ व॑च्यस्व॒ महि॒ प्सरो॒ वृषे॑न्दो द्यु॒म्नव॑त्तमः । आ योनिं॑ धर्ण॒सिः स॑दः ॥

1548. **ओ३म्** आ व॑च्यस्व॒ म॒हि प्स॑रो वृ॒षे॑न्दो द्यु॒म्नव॑त्तमः। आ योनिं॑ ध॒र्णसिः॑ स॑दः॥

1549. **ओ३म्** आत्सोम॑ इन्द्रि॒यो रसो॒ वज्र॑: सहस्र॒सा भु॑वत् । उ॒क्थं यद॑स्य॒ जाय॑ते ॥

1550. **ओ३म्** आद॑स्य शु॒ष्मिणो॒ रसे॒ विश्वे॑ दे॒वा अ॑मत्सत । यदी॒ गोभि॑र्व॒साय॑ते ॥

1551. **ओ३म्** आदीं॑ ह॒ंसो यथा॑ ग॒णं विश्व॑स्यावीवशन्म॒ति॒म् । अत्यो॒ न गोभि॑रज्यते ॥

1552. **ओ३म्** आ॒दीम॒श्वं॒ न॑ हेता॒र॑मशू॒शुभन्न॒मृता॑य। म॒धो रस॑ꣳ सध॒मा॑दे ॥

1553. **ओ३म्** आ॒दीꣳ त्रि॒तस्य॒ योषणो ह॒रिꣳ हिन्व॒न्त्यद्रि॑भिः । इ॒न्दु॒मि॒न्द्रा॑य पी॒तये॥

1554. **ओ३म्** आ॒दीꣳ ह॒ꣳसो यथा॒ ग॒णं विश्व॑स्यावीवशन्म॒तिम्। अ॒त्यो न॑ गो॒भिरज्यते॥

1555. **ओ३म्** आ॒पा॒नासो॑ वि॒वस्व॑तो॒ जन॑न्त उ॒षसो॒ भग॑म् । सूरा॒ अण्व॒ं वि त॑न्वते ॥

1556. **ओ३म्** आ॒पाना॑सो वि॒वस्व॑तो जि॒न्व॑न्त उ॒षसो भ॒ग॑म्। सू॒रा॑ अ॒ण्वं॑ वि त॒न्वते॥

1557. **ओ३म्** आ॒विवा॑सन्परा॒वतो॒ अथो॑ अर्वा॒वत॑: सु॒तः । इन्द्रा॑य सिच्यते॒ मधु॑ ॥

1558. **ओ३म्** आ॒विवा॑सन्परा॒व॑तो अ॒थो अर्वा॒व॑तः॑ सु॒तः॑। इ॒न्द्रा॑य सिच्य॒ते म॒धु॥

1559. **ओ३म्** आ॒वि॒शन्क॒लशं॑ सु॒तो वि॒श्वा॒ अर्ष॑न्न॒भि श्रिय॑: । शूरो॒ न गोषु॑ तिष्ठति ॥

1560. **ओ३म्** आ॒विश॒न्क॒लश॒ꣳ सु॒तो विश्वा॒ अ॒र्षन्न॒भि श्रि॒यः॑। इ॒न्दु॒रिन्द्रा॑य धीयते॥

1561. **ओ३म्** आ॒शु॒रर्ष बृहन्मते॒ प॒रि प्रि॒येण॒ धा॒म्ना॑। य॒त्रा॒ दे॒वा इति॒ ब्रु॒वन्॥

1562. **ओ३म्** इ॒न्दुः॑ पविष्ट चे॒त॒नः प्रि॒यः॑ क॒वीनां॒ म॒तिः॑। सृ॒जद॒श्वꣳ र॒थीरि॑व॥

1563. **ओ३म्** इन्दु॒रत्यो॒ न वा॑ज॒सृत्कनि॑क्रन्ति प॒वित्र॒ आ । यदक्षा॒रति॑ देव॒युः ॥

1564. **ओ३म्** इन्दु॑र्हिया॒नः सो॒तृभि॑र्मृ॒ज्यमा॑न॒ः कनि॑क्रदत् । इय॑र्ति व॒ग्नुमि॑न्द्रि॒यम् ॥

1565. **ओ३म्** इन्दो॒ यथा॒ तव॒ स्तवो॒ यथा॑ ते जा॒तमन्ध॑सः । नि ब॒र्हिषि॑ प्रि॒ये स॑दः ॥

1566. **ओ३म्** इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः । नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥
1567. **ओ३म्** इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥
1568. **ओ३म्** इन्दो॑ समुद्रमीङ्ख्य॒ पव॑स्व विश्वमेजय । रा॒यो ध॒र्ता न॒ ओज॑सा ॥
1569. **ओ३म्** इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥
1570. **ओ३म्** इन्द्र॑स्य सोम॒ राध॑से पुना॒नो हार्दि॑ चोदय । ऋ॒तस्य॒ योनि॑मा॒सद॑म् ॥
1571. **ओ३म्** इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । देवानां योनिमासदम् ॥
1572. **ओ३म्** इन्द्र॑स्य सोम॒ राध॑से॒ शं प॑वस्व विचर्षणे । प्र॒जाव॒द्रेत॒ आ भ॑र ॥
1573. **ओ३म्** इन्द्रा॑य सोम॒ पात॑वे॒ मदा॑य॒ परि॑ षिच्यसे । म॒न॒श्चिन्मन॑स॒स्पति॑ः ॥
1574. **ओ३म्** इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे । मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥
1575. **ओ३म्** इन्द्रा॑येन्दो म॒रुत्व॑ते॒ पव॑स्व॒ मधु॑मत्तमः । ऋ॒तस्य॒ योनि॑मा॒सद॑म् ॥
1576. **ओ३म्** इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । अर्कस्य योनिमासदम् ॥
1577. **ओ३म्** इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । अर्कस्य योनिमासदम् ॥
1578. **ओ३म्** इषं॑ तो॒काय॑ नो॒ दध॑द॒स्मभ्यं॑ सोम वि॒श्वत॑ः । आ प॑वस्व सह॒स्रिण॑म् ॥
1579. **ओ३म्** इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यꣳ सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ॥
1580. **ओ३म्** इ॒षे प॑वस्व॒ धार॑या मृ॒ज्यमा॑नो मनी॒षिभि॑ः । इन्दो॑ रु॒चाभि गा इ॑हि ॥
1581. **ओ३म्** इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि ॥
1582. **ओ३म्** इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि ॥
1583. **ओ३म्** उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे । उग्रꣳ शर्म महि श्रवः ॥
1584. **ओ३म्** उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे । उग्रꣳ शर्म महि श्रवः ॥
1585. **ओ३म्** उ॒त त्या ह॒रितो॒ दश॒ सूरो॑ अयु॒क्त यात॑वे । इन्दु॒रिन्द्र॒ इति॑ ब्रु॒वन् ॥
1586. **ओ३म्** उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥
1587. **ओ३म्** उ॒त त्वाम॑रु॒णं व॒यं गोभि॑रञ्ज्मो॒ मदा॑य॒ कम् । वि नो॑ रा॒ये दुरो॑ वृधि ॥
1588. **ओ३म्** उ॒त नो॒ गोम॑ती॒रिषो॒ विश्वा॑ अर्ष परि॒ष्टुभ॑ः । गृ॒णा॒नो ज॒मद॑ग्निना ॥
1589. **ओ३म्** उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः । गृणानो जमदग्निना ॥
1590. **ओ३म्** उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा । मक्षूतमेभिरहभिः ॥
1591. **ओ३म्** उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः । द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥
1592. **ओ३म्** उ॒तो स॒हस्र॑भर्णसं॒ वाचं॑ सोम मख॒स्युव॑म् । पु॒ना॒न इ॑न्द॒वा भ॑र ॥
1593. **ओ३म्** उत्ते॒ शुष्मा॑स ईरते॒ सिन्धो॑रू॒र्मेरि॑व स्व॒नः । वा॒णस्य॑ चोदया प॒विम् ॥
1594. **ओ३म्** उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः । वाणस्य चोदया पविम् ॥
1595. **ओ३म्** उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः । नुदस्व याः परिस्पृधः ॥

1596. **ओ३म्** उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥

1597. **ओ३म्** उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे। पवमान विदा रयिम्॥

1598. **ओ३म्** उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते॥

1599. **ओ३म्** उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे॥

1600. **ओ३म्** उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषु॥

1601. **ओ३म्** उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः ॥

1602. **ओ३म्** उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषु॥

1603. **ओ३म्** उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः॥

1604. **ओ३म्** उभे सोमावचाकशन्मृगो न तक्तो अर्षसि । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

1605. **ओ३म्** उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति॥

1606. **ओ३म्** ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे ॥

1607. **ओ३म्** एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा॥

1608. **ओ३म्** एत उ त्ये अवीवशन्काष्ठां वाजिनो अक्रत । सतः प्रासाविषुर्मतिम् ॥

1609. **ओ३म्** एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भते ॥

1610. **ओ३म्** एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते ॥

1611. **ओ३म्** एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥

1612. **ओ३म्** एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः। प्रचक्राणं महीरिषः॥

1613. **ओ३म्** एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत ॥

1614. **ओ३म्** एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत॥

1615. **ओ३म्** एतमु त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे। स्वायुधं मदिन्तमम् ॥

1616. **ओ३म्** एते वाता इवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः । अग्नेरिव भ्रमा वृथा ॥

1617. **ओ३म्** एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन्। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्॥

1618. **ओ३म्** एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे। मदिन्तमस्य धारया॥

1619. **ओ३म्** एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे । मदिन्तमस्य धारया ॥

1620. **ओ३म्** एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः । सर्गाः सृष्टा अहेषत ॥

1621. **ओ३म्** एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ॥

1622. **ओ३म्** एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥

1623. **ओ३म्** एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥

1624. **ओ३म्** एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं मदिष्ठ वीतये । गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥

1625. **ओ३म्** एवा रातिस्तुविमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र नः सचा॥

1626. ओ३म् एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥

1627. ओ३म् एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः ॥

1628. ओ३म् एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः ॥

1629. ओ३म् एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः। धारया पवते सुतः ॥

1630. ओ३म् एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरव्यत। गच्छन्वाजं सहस्रिणम् ॥

1631. ओ३म् एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप द्विषः ॥

1632. ओ३म् एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः । इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥

1633. ओ३म् एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥

1634. ओ३म् एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते । रक्षोहा वारमव्ययम् ॥

1635. ओ३म् एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥

1636. ओ३म् एष दिवं वि धावति तिरो रजाꣳसि धारया। पवमानः कनिक्रदत् ॥

1637. ओ३म् एष दिवं व्यासरत्तिरो रजाꣳस्यस्तृतः। पवमानः स्वध्वरः ॥

1638. ओ३म् एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः ॥

1639. ओ३म् एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते। अभि द्रोणान्यासदम् ॥

1640. ओ३म् एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥

1641. ओ३म् एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥

1642. ओ३म् एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ॥

1643. ओ३म् एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः। हरिर्वाजाय मृज्यते ॥

1644. ओ३म् एष देवो विपा कृतोऽति ह्वराꣳसि धावति। पवमानो अदाभ्यः ॥

1645. ओ३म् एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

1646. ओ३म् एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः । सोमो वनेषु विश्ववित् ॥

1647. ओ३म् एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित् ॥

1648. ओ३म् एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन् ॥

1649. ओ३म् एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । यत्रामृतास आसते ॥

1650. ओ३म् एष पुरू धियायते बृहते देवतातये। यत्रामृतास आशत ॥

1651. ओ३म् एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति ॥

1652. ओ३म् एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति ॥

1653. ओ३म् एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि। कविर्विप्रेण वावृधे ॥

1654. ओ३म् एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरꣳशुभिः। पतिः सिन्धूनां भवन् ॥

1655. ओ३म् एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाꣳ अति। अव शादेषु गच्छति ॥

1656. **ओ३म्** एष वसूनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ॥
1657. **ओ३म्** एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः । अव्यो वारं वि धावति ॥
1658. **ओ३म्** एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः । अव्यं वारं वि धावति ॥
1659. **ओ३म्** एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥
1660. **ओ३म्** एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति ॥
1661. **ओ३म्** एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः । अभि द्रोणानि धावति ॥
1662. **ओ३म्** एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः । अभि द्रोणानि धावति ॥
1663. **ओ३म्** एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा । करद्वसूनि दाशुषे ॥
1664. **ओ३म्** एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति । देवावीरघशꣳसहा ॥
1665. **ओ३म्** एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः । पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥
1666. **ओ३म्** एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्योऽ३. वृषा । नृम्णा दधान ओजसा ॥
1667. **ओ३म्** एष सूर्यमरोचयत्पवमानो अधि द्यवि । पवित्रे मत्सरो मदः ॥
1668. **ओ३म्** एष सूर्यमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः । विश्वा धामानि विश्ववित् ॥
1669. **ओ३म्** एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि । पवित्रे मत्सरो मदः ॥
1670. **ओ३म्** एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता । पतिर्वाचो अदाभ्यः ॥
1671. **ओ३म्** एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः । उरुगायः कविक्रतुः ॥
1672. **ओ३म्** एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः । क्रन्दन्योनिमभि प्रियम् ॥
1673. **ओ३म्** एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः । य इन्दुर्वारमाविशत् ॥
1674. **ओ३म्** एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति । गच्छं जारो न योषितम् ॥
1675. **ओ३म्** एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुन्ध्यावता पथा । यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥
1676. **ओ३म्** कविमिव प्रशꣳस्यं यं देवास इति द्विता । नि मर्त्येष्वादधुः ॥
1677. **ओ३म्** कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् । इडामस्मभ्यꣳ संयतम् ॥
1678. **ओ३म्** केतुं कृण्वं दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे ॥
1679. **ओ३म्** क्रीडुर्मखो न मꣳहयुः पवित्रꣳ सोम गच्छसि । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥
1680. **ओ३म्** गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भसे ॥
1681. **ओ३म्** गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भसे ॥
1682. **ओ३म्** गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते । विर्योना वसताविव ॥
1683. **ओ३म्** गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः । परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥
1684. **ओ३म्** गिराउ वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥
1685. **ओ३म्** गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः । पवस्व बृहतीरिषः ॥

1686. **ओ३म्** गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥
1687. **ओ३म्** घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः । अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥
1688. **ओ३म्** घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः । अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥
1689. **ओ३म्** जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे । गोषा उ अश्वसा असि ॥
1690. **ओ३म्** जघ्निर्वृत्रममित्रियंऽसस्निर्वाजं दिवेदिवे । गोषातिरश्वसा असि ॥
1691. **ओ३म्** जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि । क्रन्दं देवो न सूर्यः ॥
1692. **ओ३म्** जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥
1693. **ओ३म्** जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥
1694. **ओ३म्** तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥
1695. **ओ३म्** तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयं पुनानं वासयामसि । सोम जनस्य गोपतिम् ॥
1696. **ओ३म्** तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये । सुतं भराय सं सृज ॥
1697. **ओ३म्** तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे । ऋषीणां सप्त धीतिभिः ॥
1698. **ओ३म्** तं त्वा धर्त्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम् । हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥
1699. **ओ३म्** तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः । चारुं सुकृत्ययेमहे ॥
1700. **ओ३म्** तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतऽ सधस्थेषु महो दिवः । चारुंऽ सुकृत्ययेमहे ॥
1701. **ओ३म्** तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः ॥
1702. **ओ३म्** तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तये महे ॥
1703. **ओ३म्** तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् । सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥
1704. **ओ३म्** तं त्वा सहस्रचक्षसमथो सहस्रभर्णसम् । अति वारमपाविषुः ॥
1705. **ओ३म्** तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम् । इन्दविन्द्राय मत्सरम् ॥
1706. **ओ३म्** तं दुरोषमभीनरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञाय सन्त्वद्रयः ॥
1707. **ओ३म्** तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥
1708. **ओ३म्** तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे । हरिं हिनोत वाजिनम् ॥
1709. **ओ३म्** तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥
1710. **ओ३म्** तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव । य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥
1711. **ओ३म्** तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सऽंसऽंशिश्वरीरिव । य इन्द्रस्य हृदंऽ सनिः ॥
1712. **ओ३म्** तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥
1713. **ओ३म्** तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः । मृजन्ति देवतातये ॥
1714. **ओ३म्** तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् । जन्यास उप नो गृहम् ॥
1715. **ओ३म्** तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् । जन्यास उप नो गृहम् ॥

1716. **ओ३म्** तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत्स मन्दी धावति ॥

1717. **ओ३म्** तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत्स मन्दी धावति ॥

1718. **ओ३म्** तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1719. **ओ३म्** तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोकव्याँशत । पवमानस्य मरुतः ॥

1720. **ओ३म्** तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः । सहस्रधारो यात्तना ॥

1721. **ओ३म्** तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत । मदेषु सर्वधा असि ॥

1722. **ओ३म्** तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते । पवित्रं सोम धामभिः ॥

1723. **ओ३म्** तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥

1724. **ओ३म्** तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । सखित्वमा वृणीमहे ॥

1725. **ओ३म्** ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः । इन्दुमिन्द्र तव व्रते ॥

1726. **ओ३म्** ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी । प्रतीची सोम तस्थतुः ॥

1727. **ओ३म्** तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ॥

1728. **ओ३म्** तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ॥

1729. **ओ३म्** तिस्रोउ । वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ॥

1730. **ओ३म्** तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सानवि ॥

1731. **ओ३म्** तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः । सोम वर्धन्ति ते महः ॥

1732. **ओ३म्** तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥

1733. **ओ३म्** तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥

1734. **ओ३म्** ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥

1735. **ओ३म्** ते नः सहस्रिण॰ रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । स्वाना देवास इन्दवः ॥

1736. **ओ३म्** ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥

1737. **ओ३म्** ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । स्वाना देवास इन्दवः ॥

1738. **ओ३म्** ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥

1739. **ओ३म्** त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः॰ पाहि श्रृणुही गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना ॥

1740. **ओ३म्** त्वं विप्रस्त्वं कविउमधु प्र जातमन्धसः । मदेषु सर्वधा असि ॥

1741. **ओ३म्** त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1742. **ओ३म्** त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत । मदेषु सर्वधा असि ॥

1743. **ओ३म्** त्व॰ राजेव सुव्रतो गिरः सोमाविवेशिथ । पुनानो वह्ने अद्भुत ॥

1744. **ओ३म्** त्व॰ सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः । इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥

1745. **ओ३म्** त्व॰ सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्त॰ शुष्ममा भर ॥

1746. **ओ३म्** त्वꣳ सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः। सस्निर्यो अनुमाद्यः॥
1747. **ओ३म्** त्वꣳ सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद्घृतं पयः ॥
1748. **ओ३म्** त्वꣳ सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मꣳहयद्रयिः॥
1749. **ओ३म्** त्वꣳसमुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन्। पवस्व विश्वचर्षणे॥
1750. **ओ३म्** त्वꣳसूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
1751. **ओ३म्** तꣳ हिन्वन्ति मदच्युतꣳ हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥
1752. **ओ३म्** दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः॥
1753. **ओ३म्** दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम् ॥
1754. **ओ३म्** दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे । सुनोता मधुमत्तमम् ॥
1755. **ओ३म्** दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः । वृथा पवित्रे अर्षति ॥
1756. **ओ३म्** दिवो नाभा विचक्षणोऽव्यो वारे महीयते। सोमो यः सुक्रतुः कविः॥
1757. **ओ३म्** दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यते । क्रन्दन्देवाँ अजीजनत् ॥
1758. **ओ३म्** दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे। क्रन्दं देवाꣳ अजीजनः ॥
1759. **ओ३म्** देवेभ्यस्त्वा मदाय कꣳ सृजानमति मेष्यः। सं गोभिर्वासयामसि॥
1760. **ओ३म्** ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे। तरत्स मन्दी धावति॥
1761. **ओ३म्** न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे ॥
1762. **ओ३म्** न त्वा शतं चन ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन् । यत्पुनानो मखस्यसे ॥
1763. **ओ३म्** नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा । गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥
1764. **ओ३म्** नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन । इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥
1765. **ओ३म्** नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन॥
1766. **ओ३म्** नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे। कवेरपत्यमा दुहे॥
1767. **ओ३म्** नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धीनामन्तः सबर्दुघः । हिन्वानो मानुषा युगा ॥
1768. **ओ३म्** नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्। हिन्वानो मानुषा युजा॥
1769. **ओ३म्** नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद्रोचया रुचः ॥
1770. **ओ३म्** नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यꣳ सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम् ॥
1771. **ओ३म्** नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतꣳ स्वर्विदम्। भक्षीमहि प्रजामिषम्॥
1772. **ओ३म्** परि णो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत् । क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥
1773. **ओ३म्** परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः । पुनान इन्दविन्द्रयुः ॥
1774. **ओ३म्** परि द्युक्षꣳ सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा। स्वानो अर्ष पवित्र आ॥
1775. **ओ३म्** परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः । पवमान ऋतुभिः कवे ॥

1776. **ओ३म्** परि नः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ॥

1777. **ओ३म्** परि नो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥

1778. **ओ३म्** परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः । कारं बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥

1779. **ओ३म्** परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। कारुं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्॥

1780. **ओ३म्** परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः । सुवानो याति कविक्रतुः ॥

1781. **ओ३म्** परि प्रिया दिवः कविर्वयांꣳसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतु॥

1782. **ओ३म्** परि प्रिया दिवः कविर्वयांꣳसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥

1783. **ओ३म्** परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति। स्वर्वाजी सिषासति॥

1784. **ओ३म्** परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति । मदेषु सर्वधा असि ॥

1785. **ओ३म्** परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम् ॥

1786. **ओ३म्** परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः॥

1787. **ओ३म्** परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती । स नः सोम श्रवो विदः ॥

1788. **ओ३म्** परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥

1789. **ओ३म्** परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥

1790. **ओ३म्** परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥

1791. **ओ३म्** परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥

1792. **ओ३म्** परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः । वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥

1793. **ओ३म्** परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। पृष्टिं दिवः परि स्रव॥

1794. **ओ३म्** परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत ॥

1795. **ओ३म्** पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना । हिन्वानो गोरधि त्वचि ॥

1796. **ओ३म्** पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ॥

1797. **ओ३म्** पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः। गृणाना देववीतये॥

1798. **ओ३म्** पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥

1799. **ओ३म्** पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत् । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥

1800. **ओ३म्** पवमान धिया हितोऽभि योनिं कनिक्रदत्। धर्मणा वायुमारुहः॥

1801. **ओ३म्** पवमान नि तोशसे रयिꣳ सोम श्रवाय्यम्। इन्दो समुद्रमा विश॥

1802. **ओ३म्** पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति॥

1803. **ओ३म्** पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यः सुतः। विश्वा वसून्या विश॥

1804. **ओ३म्** पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता ॥

1805. **ओ३म्** पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥

1806. ओ३म् पवमानं व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥

1807. ओ३म् पवमान सुवीर्यꣳ रयिꣳ सोम रिरीहि नः । इन्द्रविन्द्रेण नो युजा ॥

1808. ओ३म् पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु नः ॥

1809. ओ३म् पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत् । चमूषु शक्मनासदम् ॥

1810. ओ३म् पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणं देववीतये ॥

1811. ओ३म् पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये॥

1812. ओ३म् पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः ॥

1813. ओ३म् पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत। जीरा अजिरशोचिषः॥

1814. ओ३म् पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः॥

1815. ओ३म् पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥

1816. ओ३म् पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वꣳ स्वर्दृशे ॥

1817. ओ३म् पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः । वि वारमव्यमर्षति ॥

1818. ओ३म् पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे॥

1819. ओ३म् पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः ॥

1820. ओ३म् पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः॥

1821. ओ३म् पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या॥

1822. ओ३म् पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि॥

1823. ओ३म् पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥

1824. ओ३म् पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥

1825. ओ३म् पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः । इन्द्रं यामेभिराशत ॥

1826. ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम् । ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥

1827. ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्॥

1828. ओ३म् पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्॥

1829. ओ३म् पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥

1830. ओ३म् पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति। यदीमृण्वन्ति वेधसः॥

1831. ओ३म् पवमानो असिष्यदद्रक्षांꣳस्यपजङ्घनत्। प्रत्नवद्रोचयन्रुचः ॥

1832. ओ३म् पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥

1833. ओ३म् पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः। हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः॥

1834. ओ३म् पवस्व गोजिदश्वजिद्विश्वजित्सोम रण्यजित् । प्रजावद्रत्नमा भर ॥

1835. ओ३म् पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥

1836. **ओ३म्** पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥
1837. **ओ३म्** पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥
1838. **ओ३म्** पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥
1839. **ओ३म्** पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥
1840. **ओ३म्** पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश॥
1841. **ओ३म्** पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः। अभि विश्वानि काव्या॥
1842. **ओ३म्** पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः॥
1843. **ओ३म्** पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः। शुचिः पावको अद्भुतः॥
1844. **ओ३म्** पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः॥
1845. **ओ३म्** पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । विश्वा अप द्विषो जहि ॥
1846. **ओ३म्** पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥
1847. **ओ३म्** पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥
1848. **ओ३म्** पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥
1849. **ओ३म्** पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥
1850. **ओ३म्** पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता । वारेण शश्वता तना ॥
1851. **ओ३म्** पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यत॥
1852. **ओ३म्** पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना। ते नो धत्त सुवीर्यम्॥
1853. **ओ३म्** पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥
1854. **ओ३म्** पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥
1855. **ओ३म्** पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥
1856. **ओ३म्** पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्यतः ॥
1857. **ओ३म्** पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्हितः ॥
1858. **ओ३म्** पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ॥
1859. **ओ३म्** पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम्॥
1860. **ओ३म्** पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥
1861. **ओ३म्** पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम्॥
1862. **ओ३म्** प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः॥
1863. **ओ३म्** प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम् ॥
1864. **ओ३म्** प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥
1865. **ओ३म्** प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥

1866. **ओ३म्** प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत । महे भराय कारिणः ॥
1867. **ओ३म्** प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन् । पुनानो वाचमिष्यति ॥
1868. **ओ३म्** प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते । हविर्हविःषु वन्द्यः ॥
1869. **ओ३म्** प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि । अभि देवाँ अयास्यः ॥
1870. **ओ३म्** प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः । सोमा असृग्रमाशवः ॥
1871. **ओ३म्** प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः । नृभिर्यतो वि नीयसे ॥
1872. **ओ३म्** प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति । क्रत्वा सधस्थमासदत् ॥
1873. **ओ३म्** प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः । देवेभ्य उत्तमं हविः ॥
1874. **ओ३म्** प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥
1875. **ओ३म्** प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥
1876. **ओ३म्** प्र युजो वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥
1877. **ओ३म्** प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥
1878. **ओ३म्** प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥
1879. **ओ३म्** प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि । जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम् ॥
1880. **ओ३म्** प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि । जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम् ॥
1881. **ओ३म्** प्र वाजमिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः । व्रता विदान आयुधा ॥
1882. **ओ३म्** प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥
1883. **ओ३म्** प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मदो यो देववीतमः ॥
1884. **ओ३म्** प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः । दधानो अक्षिति श्रवः ॥
1885. **ओ३म्** प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥
1886. **ओ३म्** प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥
1887. **ओ३म्** प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोना म् । सुता विदथे अक्र मुः ॥
1888. **ओ३म्** प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् । सुता विदथे अक्रमुः ॥
1889. **ओ३म्** प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः । वनानि महिषा इव ॥
1890. **ओ३म्** प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः । वनानि महिषा इव ॥
1891. **ओ३म्** प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः । सोमासो राये अक्रमुः ॥
1892. **ओ३म्** प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः । वीत्यर्ष पनिष्टये ॥
1893. **ओ३म्** प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः । स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः ॥
1894. **ओ३म्** प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः । यदव्य एषि सानवि ॥
1895. **ओ३म्** प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः । यदव्य एषि सानवि ॥

1896. **ओ३म्** प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्याजसः । देवाꣳ अनु प्रभूषतः ॥

1897. **ओ३म्** प्रेष्ठं वो अतिथिꣳ स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥

1898. **ओ३म्** बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे । सोमाय गाथमर्चत ॥

1899. **ओ३म्** मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ॥

1900. **ओ३म्** मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ॥

1901. **ओ३म्** मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः ॥

1902. **ओ३म्** मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् । सोमो गौरी अधि श्रितः ॥

1903. **ओ३म्** मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः । चारुर्ऋताय पीतये ॥

1904. **ओ३म्** मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अव्यो वारेभिरस्मयुः ॥

1905. **ओ३म्** मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः । अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥

1906. **ओ३म्** महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥

1907. **ओ३म्** महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः । रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥

1908. **ओ३म्** महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः । रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥

1909. **ओ३म्** मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः । प्र यत्समुद्र आहितः ॥

1910. **ओ३म्** मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥

1911. **ओ३म्** मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥

1912. **ओ३म्** मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भवो वाजानां पते । मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥

1913. **ओ३म्** ये आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । ये वा जनेषु पञ्चसु ॥

1914. **ओ३म्** य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते । मदेषु सर्वधा असि ॥

1915. **ओ३म्** यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः । तमिन्दुः परि षस्वजे ॥

1916. **ओ३म्** यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु । तन्नः पुनान आ भर ॥

1917. **ओ३म्** यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः । इन्द्रस्य सख्यमाविशन् ॥

1918. **ओ३म्** यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः । द्रोणे सधस्थमश्नुषे ॥

1919. **ओ३म्** यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमान वि तज्जहि ॥

1920. **ओ३म्** यमत्यमिव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश । वने क्रीळन्तमत्यविम् ॥

1921. **ओ३म्** यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव । विश्वा च सोम सौभगा ॥

1922. **ओ३म्** यवंयवं नो अन्धसा पुष्टम्पुष्टं परि स्रव । सोम विश्वा च सौभगा ॥

1923. **ओ३म्** यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा । देवावीरघशꣳसहा ॥

1924. **ओ३म्** यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा । देवावीरघशꣳसहा ॥

1925. **ओ३म्** यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे ॥

1926. ओ३म् यस्य ते सख्ये वयंःसासह्याम पृतन्यतः। तवेन्दो द्युम्न उत्तमे॥

1927. ओ३म् या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे। रक्षा समस्य नो निदः॥

1928. ओ३म् यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः॥

1929. ओ३म् युवंः हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती। ईशाना पिप्यतं धियः॥

1930. ओ३म् ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय॥

1931. ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति ॥

1932. ओ३म् ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति॥

1933. ओ३म् यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः । तं गीर्भिर्वासयामसि ॥

1934. ओ३म् यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित् ॥

1935. ओ३म् यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः। इन्दुरश्वो न कृत्व्यः॥

1936. ओ३म् रक्षा सु नो अररुषः स्वनात्समस्य कस्य चित् । निदो यत्र मुमुच्महे ॥

1937. ओ३म् रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम् । द्रुणा सधस्थमासदत् ॥

1938. ओ३म् रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥

1939. ओ३म् रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1940. ओ३म् रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

1941. ओ३म् रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे । पवमानस्य मरुतः ॥

1942. ओ३म् रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः ॥

1943. ओ३म् राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥

1944. ओ३म् राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥

1945. ओ३म् राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते । यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥

1946. ओ३म् राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते। यज्ञोउ न सप्त धातृभिः॥

1947. ओ३म् रायः समुद्रांःश्चतुरोऽस्मभ्यंः सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः ॥

1948. ओ३म् वरिवोधातमो भुवो मंःहिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मघोनाम्॥

1949. ओ३म् वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये । सोमाः सहस्रपाजसः ॥

1950. ओ३म् वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः। दधन्विरे गभस्त्योः॥

1951. ओ३म् विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः । तना कृण्वन्तो अर्वते ॥

1952. ओ३म् विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः। त्मना कृण्वन्तो अर्वतः॥

1953. ओ३म् विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणंः रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत् ॥

1954. ओ३म् विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्मणस्पतेः । पुनानस्य प्रभूवसोः ॥

1955. ओ३म् वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन् ॥

1956. **ओ३म्** वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः । विश्वा दधान ओजसा ॥
1957. **ओ३म्** वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥
1958. **ओ३म्** वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥
1959. **ओ३म्** वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि । हरिः सन्योनिमासदत् ॥
1960. **ओ३म्** वृषा पुनान आयूꣳषि स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरिः सन्योनिमासदः॥
1961. **ओ३म्** वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे ॥
1962. **ओ३म्** वृषा सोम द्युमाꣳ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे॥
1963. **ओ३म्** वृषा सोम द्युमाꣳअसि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥
1964. **ओ३म्** वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्॥
1965. **ओ३म्** वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्॥
1966. **ओ३म्** वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शक्मना पयः ॥
1967. **ओ३म्** वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि। सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥
1968. **ओ३म्** वृष्णस्ते वृष्ण्यꣳशवो वृषा वनं वृषा सुतः। स त्वं वृषन्वृषेदसि॥
1969. **ओ३म्** शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्। देवावीरघशꣳसहा ॥
1970. **ओ३म्** शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धूतो नृभिः सुतः । स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥
1971. **ओ३म्** शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम्। स्वदन्ति गावः पयोभिः॥
1972. **ओ३म्** शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये॥
1973. **ओ३म्** शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । चरन्ति विद्युतो दिवि ॥
1974. **ओ३म्** शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि॥
1975. **ओ३म्** स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यꣳ सह॥
1976. **ओ३म्** स देवः कविनेषितोऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मꣳहयन् ॥
1977. **ओ३म्** स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव॥
1978. **ओ३म्** स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परि स्रव॥
1979. **ओ३म्** स न ऊर्जे व्यऽव्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन् हि कम्॥
1980. **ओ३म्** स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्माँ आ विवासति ॥
1981. **ओ३म्** स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः ॥
1982. **ओ३म्** स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शꣳ राजन्नोषधीभ्यः ॥
1983. **ओ३म्** स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः ॥
1984. **ओ३म्** स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्गातुवित्तमः । वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥
1985. **ओ३म्** स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥

1986. **ओ३म्** स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् । चारुर्मित्रे वरुणे च ॥
1987. **ओ३म्** स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च ॥
1988. **ओ३म्** स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वा यमत् ॥
1989. **ओ३म्** स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर ॥
1990. **ओ३म्** स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥
1991. **ओ३म्** स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दविन्द्राय पीतये ॥
1992. **ओ३म्** स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः । इन्दविन्द्राय पीतये ॥
1993. **ओ३म्** स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। एन्द्रस्य जठरं विश ॥
1994. **ओ३म्** स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांꣳसं महीरपः॥
1995. **ओ३म्** स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण । उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥
1996. **ओ३म्** स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः । अभि योनिं कनिक्रदत् ॥
1997. **ओ३म्** स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत्॥
1998. **ओ३म्** स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः । इन्दुरत्यो विचक्षणः ॥
1999. **ओ३म्** स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु षीदति ॥
2000. **ओ३म्** स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः। श्येनो न वꣳसु षीदति॥
2001. **ओ३म्** स वह्निः सोम जागृविः पवस्व देववीरति । अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥
2002. **ओ३म्** स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति॥
2003. **ओ३म्** स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम्॥
2004. **ओ३म्** स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति । रक्षोहा वारमव्ययम् ॥
2005. **ओ३म्** स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति । रणा यो अस्य धर्मभिः ॥
2006. **ओ३म्** स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति। रणा यो अस्य धर्मणा॥
2007. **ओ३म्** स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः। सोमो वाजमिवासरत्॥
2008. **ओ३म्** स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः । या एकमक्षि वावृधुः ॥
2009. **ओ३म्** स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥
2010. **ओ३म्** स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षाꣳसि देवयुः॥
2011. **ओ३म्** स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥
2012. **ओ३म्** स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् । महान्मही ऋतावृधा ॥
2013. **ओ३म्** स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा॥
2014. **ओ३म्** स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति । पवमानः सहस्रिणम् ॥
2015. **ओ३म्** स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्रिणम्॥

2016. ओ३म् सं देवैः शोभते वृषा कविउयोनावधि प्रियः । पवमानो अदाभ्यः ॥

2017. ओ३म् सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः ॥

2018. ओ३म् संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् । शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥

2019. ओ३म् सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

2020. ओ३म् सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

2021. ओ३म् सना ज्योतिः सना स्वाऽविश्वा च सोम सौभगा । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

2022. ओ३म् सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

2023. ओ३म् सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

2024. ओ३म् सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा । ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥

2025. ओ३म् समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ । सꣳ सूर्यस्य रश्मिभिः ॥

2026. ओ३म् समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनूषत ॥

2027. ओ३म् समीचीना अनूषत हरिꣳ हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥

2028. ओ३म् समीचीनास आशते होतारः सप्तजानयः । पदमेकस्य पिप्रतः ॥

2029. ओ३म् समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः । पदमेकस्य पिप्रतः ॥

2030. ओ३म् समु त्वा धीभिरस्वरन्हिन्वतीः सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः ॥

2031. ओ३म् समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥

2032. ओ३म् समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥

2033. ओ३म् समेनमह्रुता इमा गिरो अर्षन्ति सस्रुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ॥

2034. ओ३म् सम्मिश्लो अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥

2035. ओ३म् सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदं च्छ्येनो न योनिमा ॥

2036. ओ३म् सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः । इन्द्राय पवते मदः ॥

2037. ओ३म् सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे ॥

2038. ओ३म् सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन् ॥

2039. ओ३म् सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन् ॥

2040. ओ३म् सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥

2041. ओ३म् सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे । चारुं शर्धाय मत्सरम् ॥

2042. ओ३म् सुवितस्य वनामहेऽति सेतुं दुराय्यम् । साह्याम दस्युमव्रतम् ॥

2043. ओ३म् सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो । वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥

2044. ओ३म् सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

2045. ओ३म् सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

2046. ओ३म् सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥
2047. ओ३म् सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया । इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥
2048. ओ३म् सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने । इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥
2049. ओ३म् सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम् । सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥
2050. ओ३म् स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति । यदी मर्मृज्यते धियः ॥
2051. ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥
2052. ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥
2053. ओ३म् स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥
2054. ओ३म् हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन । मधावा धावता मधु ॥
2055. ओ३म् हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतꣳ सोमं पुनीतन । मधावा धावता मधु ॥
2056. ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् । अभि गिरा समस्वरन् ॥
2057. ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् । महामिन्दुं महीयुवः ॥
2058. ओ३म् हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् । महामिन्दुं महीयुवः ॥
2059. ओ३म् हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः । भरासः कारिणामिव ॥
2060. ओ३म् हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत् । सीदन्तो वनुषो यथा ॥

53. पूजा देवता

2061. ओ३म् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन ।स्तोतारस्तऽइह स्मसि ॥

54. पूषा

2062. ओ३म् अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥
2063. ओ३म् अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय । पणेश्चिद्वि म्रदा मनः ॥
2064. ओ३म् अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि ॥
2065. ओ३म् अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज ॥
2066. ओ३म् अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥
2067. ओ३म् आ तत्ते दस्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितॄनचोदयः ॥
2068. ओ३म् आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः । आजा नष्टं यथा पशुम् ॥
2069. ओ३म् आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥
2070. ओ३म् आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम् । देवं वहन्तु बिभ्रतः ॥
2071. ओ३म् इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम् । आरात्पूषन्नसि श्रुतः ॥
2072. ओ३म् इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ॥
2073. ओ३म् उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत । नृवत्कृणुहि वीतये ॥

2074. ओ३म् उतं नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत । नृवत्कृणुह्यूतये ॥

2075. ओ३म् उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँ अनुसेषिधत् । गोभिर्यवं न चर्कृषत् ॥

2076. ओ३म् एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै । रथीर्ऋतस्य नो भव ॥

2077. ओ३म् तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम् ॥

2078. ओ३म् न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दस्ममीमहे ॥

2079. ओ३म् पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि ॥

2080. ओ३म् पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ॥

2081. ओ३म् पूषा राजानमाघृणिरपगूळ्हं गुहा हितम् । अविन्दच्चित्रबर्हिषम् ॥

2082. ओ३म् माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे । अथारिष्टाभिरा गहि ॥

2083. ओ३म् मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः । भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ॥

2084. ओ३म् य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम् । न तेन देव आदिशे ॥

2085. ओ३म् यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः । तत्सु नो मन्म साधय ॥

2086. ओ३म् यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते । प्रथमो विन्दते वसु ॥

2087. ओ३म् यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि ॥

2088. ओ३म् यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत् ॥

2089. ओ३म् रथीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः । रायः सखायमीमहे ॥

2090. ओ३म् वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुज्महि ॥

2091. ओ३म् वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि । साधन्तामुग्र नो धियः ॥

2092. ओ३म् वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम् । अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥

2093. ओ३म् शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ॥

2094. ओ३म् सं पूषन्विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥

2095. ओ३म् समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति । इम एवेति च ब्रवत् ॥

55. पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः

2096. ओ३म् दश श्यावा ऋधद्रयो वीतवारास आशवः । मथ्रा नेमिं नि वावृतुः ॥

56. प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः

2097. ओ३म् दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्रायो अमंहत ॥

2098. ओ३म् शतं श्वेतास उक्षणो दिवि तारो न रोचन्ते । मह्ना दिवं न तस्तभुः ॥

2099. ओ३म् सुदेवाः स्थ काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वासो न चङ्क्रमत ॥

57. फालमणिः, वनस्पतिः

2100. ओ३म् अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हार्दो द्विषतः शिरः । अपि वृश्चाम्योजसा ॥

2101. **ओ३म्** तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत्। तेन त्वं द्विषतो जहि ॥

2102. **ओ३म्** हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत्। गृहे वसतु नोऽतिथिः ॥

58. बर्हिः

2103. **ओ३म्** स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥

59. बृबुस्तक्षा

2104. **ओ३म्** यस्य वायोरिव द्रवद्भद्रा रातिः सहस्रिणी । सद्यो दानाय मंहते ॥

60. बृहस्पतिर्देवता

2105. **ओ३म्** यो रेवान् योऽअमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्द्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥

61. ब्रह्मगवी

2106. **ओ३म्** अघ्न्ये प्र शिरो जहि ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः ॥

2107. **ओ३म्** एवा त्वं देव्यघ्न्ये ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः ॥

2108. **ओ३म्** सा ब्रह्मज्यं देवपीयुं ब्रह्मगव्यादीयमाना मृत्योः पड्वीष आ द्यति ॥

62. ब्रह्मणस्पतिः

2109. **ओ३म्** यो रेवान्यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥

2110. **ओ३म्** सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तँ य औशिजः॥

63. मन्त्रोक्ताः

2111. **ओ३म्** अपि वृश्च पुराणवद्व्रततेरिव गुष्पितम्। ओजो दास्यस्य दम्भय ॥

64. मरुतः

2112. **ओ३म्** अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः । वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह ॥

2113. **ओ३म्** अस्ति सोमो अयꣳ सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना॥

2114. **ओ३म्** अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु । उक्थं मदश्च शस्यते ॥

2115. **ओ३म्** आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम्॥

2116. **ओ३म्** आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । आरे अश्मा यमस्यथ ॥

2117. **ओ३म्** उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी । अदेवत्रादराधसः ॥

2118. **ओ३म्** उत मे वोचतादिति सुतसोमे रथवीतौ । न कामो अप वेति मे ॥

2119. **ओ३म्** उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः। प्रातर्होतेव मत्सति ॥

2120. **ओ३म्** उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥

2121. **ओ३म्** एतं मे स्तोममूर्म्ये दार्भ्याय परा वह । गिरो देवि रथीरिव ॥

2122. **ओ३म्** को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः । ऋतजाता अरेपसः ॥

2123. **ओ३म्** गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती सुदानवः ॥
2124. **ओ३म्** गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् ॥ युक्ता वह्नी रथानाम् ॥
2125. **ओ३म्** जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ॥
2126. **ओ३म्** तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् । अनु प्र यन्ति वृष्टयः ॥
2127. **ओ३म्** तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः । ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ॥
2128. **ओ३म्** ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः । आ यज्ञियासो ववृत्तन ॥
2129. **ओ३म्** परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः । अग्नितपो यथासथ ॥
2130. **ओ३म्** पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥
2131. **ओ३म्** प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः । करम्भेण सजोषसः ॥
2132. **ओ३म्** मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥
2133. **ओ३म्** युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः । शुभंयावाप्रतिष्कुतः ॥
2134. **ओ३म्** यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः ॥
2135. **ओ३म्** यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतार इत्था धिया । श्रोतारो यामहूतिषु ॥
2136. **ओ३म्** शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः ॥
2137. **ओ३म्** शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः ॥
2138. **ओ३म्** सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम् । श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्बृहत् ॥
2139. **ओ३म्** सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन । युष्माकोती रिशादसः ॥

65. मरुतः

2140. **ओ३म्** अच्छा वदा तना गिरा जरायै ब्रह्मणस्पतिम् । अग्निं मित्रं न दर्शतम् ॥
2141. **ओ३म्** अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥
2142. **ओ३म्** आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् । इयर्ता मरुतो दिवः ॥
2143. **ओ३म्** आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन्रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये ॥
2144. **ओ३म्** इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः । वर्धान्काण्वस्य मन्मभिः ॥
2145. **ओ३म्** इमां मे मरुतो गिरमिमं स्तोममृभुक्षणः । इमं मे वनता हवम् ॥
2146. **ओ३म्** उदीरयन्त वायुभिर्वाश्रासः पृश्निमातरः । धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ॥
2147. **ओ३म्** उदु त्ये अरुणप्सवश्चित्रा यामेभिरीरते । वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ॥
2148. **ओ३म्** उदु स्वानेभिरीरत उद्रथैरुदु वायुभिः । उत्स्तोमैः पृश्निमातरः ॥
2149. **ओ३म्** कदत्विषन्त सूरयस्तिर आप इव स्रिधः । अर्षन्ति पूतदक्षसः ॥
2150. **ओ३म्** कुदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम् । मार्डीकेभिर्नाधमानम् ॥
2151. **ओ३म्** कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः । दधिध्वे वृक्तबर्हिषः ॥

2152. **ओ३म्** कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन । को वः सखित्व ओहते ॥

2153. **ओ३म्** को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥

2154. **ओ३म्** क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत ॥

2155. **ओ३म्** गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः । पर्वताश्चिन्नि येमिरे ॥

2156. **ओ३म्** तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये ॥

2157. **ओ३म्** त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु । उत्सं कवन्धमुद्रिणम् ॥

2158. **ओ३म्** देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसु गिरः । महामनूषत श्रुतम् ॥

2159. **ओ३म्** नहि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः । शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ ॥

2160. **ओ३म्** नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे ॥

2161. **ओ३म्** नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥

2162. **ओ३म्** पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥

2163. **ओ३म्** प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत् । वि पर्वतेषु राजथ ॥

2164. **ओ३म्** प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥

2165. **ओ३म्** मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे । आ तू न उप गन्तन ॥

2166. **ओ३म्** मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन । गिरीँरचुच्यवीतन ॥

2167. **ओ३म्** मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु । यातेमखिद्रयामभिः ॥

2168. **ओ३म्** यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः । यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः ॥

2169. **ओ३म्** यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे । उत प्रचेतसो मदे ॥

2170. **ओ३म्** ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः ॥

2171. **ओ३म्** येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम् । राये सु तस्य धीमहि ॥

2172. **ओ३म्** येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँ इव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ॥

2173. **ओ३म्** वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम् । अस्मे वृद्धा असन्निह ॥

2174. **ओ३म्** वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान् । यद्यामं यान्ति वायुभिः ॥

2175. **ओ३म्** वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति । यदेषां वृष्टिरसर्जि ॥

2176. **ओ३म्** सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः । स्तुषे हिरण्यवाशीभिः ॥

2177. **ओ३म्** सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय यातवे । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ॥

66. मरुद्गणः

2178. **ओ३म्** अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि। समस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥

2179. **ओ३म्** अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति। गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥

2180. **ओ३म्** आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम् ॥

2181. **ओ३म्** आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥
2182. **ओ३म्** इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥
2183. **ओ३म्** मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥
2184. **ओ३म्** यूयं नः प्रवतो नपान्मरुतः सूर्यत्वचसः । शर्म यच्छाथ सप्रथः ॥

67. मरूत इन्द्रश्च

2185. **ओ३म्** इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥
2186. **ओ३म्** वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्रिया अनु ॥

68. मित्रः

2187. **ओ३म्** अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः । अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥
2188. **ओ३म्** मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे । स देवान्विश्वान्बिभर्ति ॥

69. मित्रावरुणौ

2189. **ओ३म्** अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ॥
2190. **ओ३म्** अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतꣳ हवम् ॥
2191. **ओ३म्** आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम् ॥
2192. **ओ३म्** आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजाꣳसि सुक्रतू ॥
2193. **ओ३म्** आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥
2194. **ओ३म्** उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ॥
2195. **ओ३म्** उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥
2196. **ओ३म्** उरुशꣳसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥
2197. **ओ३म्** ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥
2198. **ओ३म्** ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥
2199. **ओ३म्** ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥
2200. **ओ३म्** ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥
2201. **ओ३म्** ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ॥
2202. **ओ३म्** ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ॥
2203. **ओ३म्** कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥
2204. **ओ३म्** कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥
2205. **ओ३म्** गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा ।उभा कर्णा हिरण्यया ॥
2206. **ओ३म्** गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा ॥
2207. **ओ३म्** गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातꣳ सोममृतावृधा ॥

2208. **ओ३म्** ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥

2209. **ओ३म्** तां नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥

2210. **ओ३म्** तां नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वा क्षत्रं देवेषु ॥

2211. **ओ३म्** तां वांꣳसम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम ॥

2212. **ओ३म्** ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम् ॥

2213. **ओ३म्** तां सम्राजां घृतासुती आदित्यां दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम् ॥

2214. **ओ३म्** पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथाꣳसुत्रात्रा साह्याम दस्यू तनूभिः ॥

2215. **ओ३म्** पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम दस्यून्तनूभिः ॥

2216. **ओ३म्** पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंꣳसि वांꣳसुमतिम् ॥

2217. **ओ३म्** प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदेरघुः ॥

2218. **ओ३म्** प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत् ॥

2219. **ओ३म्** मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ॥

2220. **ओ३म्** मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ॥

2221. **ओ३म्** मित्रं वयंꣳ हवामहे वरुणंꣳ सोमपीतये । या जाता पूतदक्षसा ॥

2222. **ओ३म्** मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता ॥

2223. **ओ३म्** मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।धियं घृताचीꣳ साधन्ता ॥

2224. **ओ३म्** मित्रंꣳहुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचींꣳसाधन्ता ॥

2225. **ओ३म्** यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ॥

2226. **ओ३म्** युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम् । ऋतुना यज्ञमाशाथे ॥

2227. **ओ३म्** राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आशाते ॥

2228. **ओ३म्** वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥

2229. **ओ३म्** वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥

2230. **ओ३म्** विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥

2231. **ओ३म्** वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ॥

2232. **ओ३म्** व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥

2233. **ओ३म्** सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता ॥

70. रथवीतिर्दाल्भ्यः

2234. **ओ३म्** ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान् । दश शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् ॥

2235. **ओ३म्** एष क्षेति रथवीतिर्मघवा गोमतीरनु । पर्वतेष्वपश्रितः ॥

2236. **ओ३म्** तत्सु वां॑ मित्रावरुणा महि॒त्वमी॒र्मा त॒स्थुषी॒रह॑भिर्दुदुह्रे । विश्वा॑: पिन्वथ॒: स्वस॑रस्य॒ धेना॒ अनु॑ वा॒मेक॑: प॒विरा व॑वर्त ॥

71. रात्रिस्तवः

2237. **ओ३म्** उप॑ ते॒ गा इ॒वाक॑रं वृणी॒ष्व दु॑हितर्दिवः । रात्रि॒ स्तोमं॒ न जि॒ग्युषे॑ ॥

2238. **ओ३म्** नि ग्रामा॑सो अविक्षत॒ नि प॒द्वन्तो॒ नि प॒क्षिण॑: । नि श्ये॒नास॑श्चिद॒र्थिन॑: ॥

2239. **ओ३म्** सा नो॑ अ॒द्य यस्या॑ व॒यं नि ते॒ याम॒न्नवि॑क्ष्महि । वृ॒क्षे न व॑स॒तिं वय॑: ॥

72. रुद्रः

2240. **ओ३म्** कद्रु॒द्राय॒ प्रचे॑तसे मी॒ळ्हुष्ट॑माय॒ तव्य॑से । वो॒चेम॒ शंत॑मं हृ॒दे ॥

2241. **ओ३म्** गा॒थप॑तिं मे॒धप॑तिं रु॒द्रं जला॑षभेषजम् । तच्छं॒योः सु॒म्नमी॑महे ॥

2242. **ओ३म्** यथा॑ नो॒ अदि॑ति॒: कर॒त्पश्वे॒ नृभ्यो॒ यथा॒ गवे॑ । यथा॑ तो॒काय॑ रु॒द्रिय॑म् ॥

73. रुद्रः, व्याघ्रः

2243. **ओ३म्** अ॒क्ष्यौ॑ च ते॒ मुखं॑ च ते॒ व्याघ्र॑ जम्भयामसि। आत्सर्वा॑न्विंश॒तिं न॒खान् ॥

74. वरुणः

2244. **ओ३म्** इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके ॥

2245. **ओ३म्** उदु॑त्त॒मं मु॑मुग्धि नो॒ वि पाशं॑ मध्य॒मं चृ॑त । अवा॑ध॒मानि॑ जी॒वसे॑ ॥

2246. **ओ३म्** क॒दा क्ष॑त्र॒श्रियं॒ नर॒मा वरु॑णं करामहे । मृ॒ळी॒काया॑रु॒चक्ष॑सम् ॥

2247. **ओ३म्** तदित्स॑मा॒नमा॑शाते॒ वेन॑न्ता॒ न प्र यु॑च्छतः । धृ॒तव्र॑ताय दा॒शुषे॑ ॥

2248. **ओ३म्** दर्शं॒ नु वि॒श्वद॑र्शतं॒ दर्शं॒ रथ॒मधि॒ क्षमि॑ । ए॒ता जु॑षत मे॒ गिर॑: ॥

2249. **ओ३म्** परा॑ मे यन्ति धी॒तयो॒ गावो॒ न गव्यू॑ती॒रनु॑ । इ॒च्छन्ती॑रु॒रुचक्ष॑सम् ॥

2250. **ओ३म्** परा॒ हि मे॒ विम॑न्यव॒: पत॑न्ति॒ वस्य॑इष्टये । वयो॒ न व॑स॒तीरुप॑ ॥

2251. **ओ३म्** बिभ्र॑द्द्रा॒पिं हि॑र॒ण्ययं॒ वरु॑णो वस्त नि॒र्णिज॑म् । परि॒ स्पशो॒ नि षे॑दिरे ॥

2252. **ओ३म्** मा नो॑ व॒धाय॑ ह॒त्नवे॑ जिहीळा॒नस्य॑ रीरधः । मा हृ॑णा॒नस्य॑ म॒न्यवे॑ ॥

2253. **ओ३म्** यच्चि॒द्धि ते॒ विशो॑ यथा॒ प्र दे॑व वरुण व्र॒तम् । मि॒नी॒मसि॒ द्यवि॑द्यवि ॥

2254. **ओ३म्** यु॒ञ्जाथा॒ꣳ रास॑भं यु॒वम॒स्मिन् यामे॑ वृषण्वसू। अ॒ग्निं भर॑न्तम॒स्म॒युम्॥

2255. **ओ३म्** वरु॑णः प्रावि॒ता भु॑वन्मि॒त्रो विश्वा॑भिरू॒तिभि॑: ।कर॑तां नः सु॒राध॑सः॥

2256. **ओ३म्** वि मृ॑ळी॒काय॑ ते॒ मनो॑ र॒थीरश्वं॒ न संदि॑तम् । गी॒र्भिर्व॑रुण सीमहि ॥

2257. **ओ३म्** स नो॑ वि॒श्वाहा॑ सु॒क्रतु॑रादि॒त्यः सु॒पथा॑ करत् । प्र ण॒ आयूं॑षि तारिषत् ॥

75. वरुणमित्रार्यमणः

2258. **ओ३म्** मा वो॒ घ्नन्तं॒ मा शप॑न्तं॒ प्रति॑ वोचे देव॒यन्त॑म् । सु॒म्नैरिद्व॒ आ वि॑वासे ॥

2259. **ओ३म्** यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । नू चित्स दभ्यते जनः ॥

76. वायुः

2260. **ओ३म्** उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा । स नो जीवातवे कृधि ॥

2261. **ओ३म्** उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि॥

2262. **ओ३म्** नियुत्वान्वायवा गह्ययंः शुक्रो अयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥

2263. **ओ३म्** यददो वात ते गृहेऽ.ऽमृतं निहितं गुहा। तस्य नो धेहि जीवसे ॥

2264. **ओ३म्** वात आ वातु भेषजंः शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत्॥

2265. **ओ३म्** वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे । प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥

2266. **ओ३म्** वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्।शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥

2267. **ओ३म्** वायो तव प्रपृञ्चती धेना जिगाति दाशुषे । उरूची सोमपीतये ॥

2268. **ओ३म्** वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥

2269. **ओ३म्** वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥

2270. **ओ३म्** स त्वं नो देव मनसा वायो मन्दानो अग्रियः । कृधि वाजाँ अपो धियः॥

77. विद्वांसो

2271. **ओ३म्** अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप। त्वष्टारंः सोमपीतये॥

2272. **ओ३म्** केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

78. विद्वान्

2273. **ओ३म्** अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिबऽऋतुना। त्वहि रत्नधा ऽअसि॥

79. विश्वेदेवा ऋत्विजो वा

2274. **ओ३म्** इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम् ॥

2275. **ओ३म्** सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्नया ॥

80. विश्वेदेवाः

2276. **ओ३म्** अधि पुत्रोपमश्रवो नपान्मित्रातिथेरिहि । पितुष्टे अस्मि वन्दिता ॥

2277. **ओ३म्** आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः । देवेभिरग्न आ गहि ॥

2278. **ओ३म्** आकीं सूर्यस्य रोचनाद्विश्वान्देवाँ उषर्बुधः । विप्रो होतेह वक्षति ॥

2279. **ओ३म्** इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ॥

2280. **ओ३म्** इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम् । आदित्यान्मारुतं गणम् ॥

2281. **ओ३म्** ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः । हविष्मन्तो अरंकृतः ॥

2282. **ओ३म्** उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः ॥

2283. **ओ३म्** ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये । देवेभिर्याहि यक्षि च ॥

2284. **ओ३म्** ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत । दाश्वांसो दाशुषः सुतम् ॥
2285. **ओ३म्** कुरुश्रवणमावृणि राजानं त्रासदस्यवम् । मंहिष्ठं वाघतामृषिः ॥
2286. **ओ३म्** घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नयः । आ देवान्त्सोमपीतये ॥
2287. **ओ३म्** जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ॥
2288. **ओ३म्** तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत् ॥
2289. **ओ३म्** ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः ॥
2290. **ओ३म्** ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महोभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा ॥
2291. **ओ३म्** देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥
2292. **ओ३म्** न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति । तथा युजा वि वावृते ॥
2293. **ओ३म्** प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः । द्रप्सा मध्वश्चमूषदः ॥
2294. **ओ३म्** मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव९ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥२८॥
2295. **ओ३म्** मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥
2296. **ओ३म्** मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः । मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥
2297. **ओ३म्** यस्य प्रस्वादसो गिर उपमश्रवसः पितुः । क्षेत्रं न रण्वमूचुषे ॥
2298. **ओ३म्** यस्य मा हरितो रथे तिस्रो वहन्ति साधुया । स्तवै सहस्रदक्षिणे ॥
2299. **ओ३म्** यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अधा चिद्व उत ब्रुवे ॥
2300. **ओ३म्** ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् । विदन्नह द्वितासनन् ॥
2301. **ओ३म्** येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम् । तेना नः शर्म यच्छत ॥
2302. **ओ३म्** यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ॥
2303. **ओ३म्** वयमिद्वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे ॥
2304. **ओ३म्** वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्नयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः ॥
2305. **ओ३म्** वामस्य हि प्रचेतस ईशानाशो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत् ॥
2306. **ओ३म्** विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ॥
2307. **ओ३म्** विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः ॥
2308. **ओ३म्** विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥
2309. **ओ३म्** विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥
2310. **ओ३म्** विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमा गन्त तूर्णयः । उस्रा इव स्वसराणि ॥
2311. **ओ३म्** विश्वे देवासो अस्रिध एहिमायासो अद्रुहः । मेधं जुषन्त वह्नयः ॥
2312. **ओ३म्** स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमान्मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ॥

81. विष्णुः

2313. **ओ३म्** अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥
2314. **ओ३म्** इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुले॥
2315. **ओ३म्** इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुले॥
2316. **ओ३म्** इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे ॥
2317. **ओ३म्** तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥
2318. **ओ३म्** तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते।विष्णोर्यत्परमं पदम्॥
2319. **ओ३म्** तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवांꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥
2320. **ओ३म्** तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥
2321. **ओ३म्** तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥
2322. **ओ३म्** तद्विष्णोः परमं पदꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥
2323. **ओ३म्** त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥
2324. **ओ३म्** त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। इतो धर्माणि धारयन् ॥
2325. **ओ३म्** दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्। हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् ॥
2326. **ओ३म्** विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥
2327. **ओ३म्** विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥

82. वैश्वानरः

2328. **ओ३म्** वैश्वानरो न आगमदिमं यज्ञं सजूरुप। अग्निरुक्थेष्वंहसु ॥
2329. **ओ३म्** वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ॥
2330. **ओ३म्** वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाक्लृपत्। एषु द्युम्नं स्वर्यमत् ॥

83. शशीयशी

2331. **ओ३म्** उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः । स वैरदेय इत्समः ॥
2332. **ओ३म्** उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम् । वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे ॥
2333. **ओ३म्** यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत् । तरन्त इव मंहना ॥

84. संस्फानम्

2334. **ओ३म्** अयं नो नभसस्पतिः संस्फानो अभि रक्षतु। असमातिं गृहेषु नः ॥
2335. **ओ३म्** त्वं नो नभसस्पत ऊर्जं गृहेषु धारय। आ पुष्टमेत्वा वसु ॥

85. सदसस्पतिः

2336. **ओ३म्** यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन । स धीनां योगमिन्वति ॥

86. सदसस्पतिर्नराशंसो वा

2337. **ओ३म्** नराशंसं सुधृष्टमपश्यं सप्रथस्तमम् । दिवो न सद्ममखसम् ॥

87. सरस्वती

2338. **ओ३म्** उतं नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥
2339. **ओ३म्** उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम् ॥
2340. **ओ३म्** पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥
2341. **ओ३म्** पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥
2342. **ओ३म्** महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥
2343. **ओ३म्** महोऽअर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥
2344. **ओ३म्** यस्या अनन्तो अह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्चरति रोरुवत् ॥
2345. **ओ३म्** शिवा नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति । मा ते युयोम संदृशः ॥

88. सरस्वान्

2346. **ओ३म्** जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तꣳहवामहे ॥

89. सविता

2347. **ओ३म्** आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम् ॥
2348. **ओ३म्** उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । अस्मान्पुनीहि चक्षसे ॥
2349. **ओ३म्** तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
2350. **ओ३म्** तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
2351. **ओ३म्** देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेषिताः ॥
2352. **ओ३म्** देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे । सुमतिꣳ सत्यराधसम् ॥
2353. **ओ३म्** य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन । प्र च सुवाति सविता ॥
2354. **ओ३म्** य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन् । स्वाधीर्देवः सविता ॥
2355. **ओ३म्** विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ॥
2356. **ओ३म्** विभक्तारꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ॥
2357. **ओ३म्** विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥
2358. **ओ३म्** विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्नऽआ सुव ॥
2359. **ओ३म्** सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः । दाता राधांसि शुम्भति ॥
2360. **ओ३म्** सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः ॥
2361. **ओ३म्** सुष्टुतिꣳ सुमतीवृधो रातिꣳ सवितुरीमहे । प्र देवाय मतीविदे ॥
2362. **ओ३म्** हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम् ॥

2363. ओ३म् हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये। स चेत्ता देवता पदम्॥

90. सविता भगो वा

2364. ओ३म् अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे ॥

2365. ओ३म् भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ॥

2366. ओ३म् यश्चिद्धि तं इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥

91. सार्पराज्ञी सूर्यो वा

2367. ओ३म् त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतंगाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥

92. सावर्णेर्दानस्तुतिः

2368. ओ३म् उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा । यदुस्तुर्वश्च मामहे ॥

93. सूर्यः

2369. ओ३म् अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥

2370. ओ३म् अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ३अनु। भ्रा जन्तो अग्नयो यथा॥

2371. ओ३म् अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥

2372. ओ३म् अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥

2373. ओ३म् अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे॥

2374. ओ३म् अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे ॥

2375. ओ३म् अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥

2376. ओ३म् अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः॥

2377. ओ३म् आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

2378. ओ३म् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

2379. ओ३म् उद्द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य॥

2380. ओ३म् चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः ॥

2381. ओ३म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमा भासि रोचन ॥

2382. ओ३म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥

2383. ओ३म् त्रि२शषद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥

2384. ओ३म् प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। स्वर्दृशे॥

2385. ओ३म् प्रत्यङ्देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः। प्रत्यङ्विश्वं स्वर्दृशे ॥

2386. ओ३म् येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि ॥

2387. **ओ३म्** येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाअनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥
2388. **ओ३म्** वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मिमानो अक्तुभिः । पश्यं जन्मानि सूर्य ॥
2389. **ओ३म्** सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण ॥
2390. **ओ३म्** सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षणम् ॥

94. सोमः

2391. **ओ३म्** अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद्दुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ॥
2392. **ओ३म्** अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमातीः सहमानः । सोमः सधस्थमासदत् ॥
2393. **ओ३म्** अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥
2394. **ओ३म्** इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव ॥
2395. **ओ३म्** गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥
2396. **ओ३म्** त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद्द्वेषः ॥
2397. **ओ३म्** द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत ।नेष्ट्राद्दतुभिरिष्यत ॥
2398. **ओ३म्** पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥
2399. **ओ३म्** मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथा राजन् । मा नो हार्दि त्विषा वधीः ॥
2400. **ओ३म्** मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्दो वाजे भज ॥
2401. **ओ३म्** येन सोम साहन्त्यासुरान्रन्धयासि नः । तेना नो अधि वोचत ॥
2402. **ओ३म्** वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥
2403. **ओ३म्** सुशेवो नो मृळयाकुरदृप्तक्रतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ॥
2404. **ओ३म्** सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत् ॥
2405. **ओ३म्** सोमो जिगाति गातुविद्देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम् ॥
2406. **ओ३म्** स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥